डी. एल. एड प्रथम वर्ष

भाग 'अ'

क्रमांक	विषय
1.	भूमिका
2.	डी.एल.एड पाठ्यचर्या के उद्देश्य
3.	पाठ्यचर्या में बदलाव की आवश्यकता
4.	पाठ्यचर्या का ढाचां
5.	मूल्यांकन योजना

पाठ्यक्रम का वितरण
भाग 'ब'

प्रश्न– पत्र 1	बाल्यावस्था एवं बाल विकास **Childhood and development of Children**
प्रश्न– पत्र 2	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा **Education in contemporary Indian Society**
प्रश्न– पत्र 3	पूर्व बाल्यावस्था– परिचर्या एवं शिक्षा **Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)**
प्रश्न– पत्र 4	भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास **Understanding Language and Early Language Development**
प्रश्न– पत्र 5	पाठ्यचर्या में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का एकीकरण **ICT Integration across the caricullumn**
प्रश्न– पत्र 6	**Proficiency in English**
प्रश्न– पत्र 7	योग शिक्षा **Yoga Education (First Year)**
प्रश्न– पत्र 8	क्षेत्रीय भाषा शिक्षण क. हिन्दी भाषा शिक्षण **Hindi Language Teaching** ख. संस्कृत भाषा शिक्षण **Sanskrit Language Teaching** ग. मराठी भाषा शिक्षण **Marathi Language Teaching** घ. उर्दू भाषा शिक्षण **Urdu Language Teaching**
प्रश्न– पत्र 9	**Pedagogy of English**
प्रश्न– पत्र 10	गणित शिक्षण (प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक के लिये) **Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)**

प्रथम वर्ष– व्यावहारिक

1.	स्व बोध **Towards Self-Understanding**	81
2.	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा **Creative Drama, Fine Art and Education**	90
3.	बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा **Children's Physical and Emotional Health and Education**	96
4.	शाला स्थान बद्ध कार्यक्रम (इंटर्नशिप) **Teaching Practice and School Internship**	102

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

बाल्यावस्था एवं बाल विकास

(Childhood and Development of Children)

(प्रश्न पत्र–1)

पूर्णांक अंक –100
बाह्य मूल्यांकन–70
आंतरिक मूल्यांकन–30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

प्रारंभिक स्कूल शिक्षकों के लिए बहुत जरूरी है कि ये अपने विद्यार्थी बच्चों को पूरी तरह और गहराई से समझें। यह पाठ्यक्रम प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा से जुड़े प्राध्यापकों को बचपन और बाल विकास के अध्ययन से व्यवस्थित रूप से परिचित कराने के लिए बनाया गया है। यह पाठ्यक्रम निश्चित रूप से एक बुनियाद है जिस पर आगे पाठ्यक्रम और स्कूल से संबंधित प्रायोगिक कार्य आधारित होंगे। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों को प्रारंभिक स्कूली बच्चे और उसके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के बारे में जरूरी व आधारभूत समझ बनाने में मदद करना है। इसमें सिद्धान्तों के साथ ही साथ बच्चों और बचपन से जुड़े सामाजिक–सांस्कृतिक मुद्दों को गहनता से समझने के मौके शामिल होंगे। इन सब बातों को शामिल करने के पीछे उद्देश्य है कि सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में बच्चों की विकास संबंधी जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता बने।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- बच्चे और बचपन के बारे में आम धारणा की समीक्षा करना (खासतौर से भारतीय समाज के संदर्भ में), बचपन पर असर डालने वाली विभिन्न सामाजिक/शैक्षिक/सांस्कृतिक वास्तविकताओं की संवेदनशील और आलोचनात्मक समझ विकसित करना।
- बच्चे के शारीरिक, गत्यात्मक (motor), सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं पर समझ विकसित करना।
- सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में विविध क्षमताओं वाले बच्चों के विकास की प्रक्रिया को समझना।

- बच्चों के साथ रूबरू बातचीत करने के मौके उपलब्ध कराना और बच्चों के विकास के पहलुओं को समझने की विधियों पर प्रशिक्षण देना।

बाल विकास और सीखना के तहत बच्चे, बचपन और सीखने की बदलती हुई मान्यताओं के प्रकाश में विकास के विविध पहलुओं को समाहित किया गया है। अध्ययन के एक विषय के रूप में यह शिक्षक को बच्चों, उनके विकास के विविध पहलुओं और विकास के निहित प्रक्रियाओं को समझने का पर्याप्त अवसर और दृष्टि देता है। साथ ही अनेक प्रकार के कौशल और अवधारणाओं/तरीकों को भी सीखने में मदद करता है। यह सच है कि शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक विकास, जो कि बच्चों के जीवन के शुरुआती सालों में होता है, वह भविष्य में सीखने की नींव रखता है। इसलिए शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों, बचपन, बच्चों के सोचने, तर्क करने और सीखने की स्पष्ट समझ रखते हों; वयस्क होने के नाते और खासतौर पर एक शिक्षक होते हुए हम बच्चों की तरफ से खुद ही निर्णय लेते हैं। ये कमोबेश हमारे अपने अनुभवों पर आधारित होते हैं जो हम अवलोकनो के आधार पर हासिल करते हैं। इस तरह हम सभी, खासतौर से शिक्षकों के पास बच्चों के विकास संबंधी कुछ स्वाभाविक समझ होती है। बच्चे नाना प्रकार से सीखते हैं और सभी बच्चे सीखने के प्रति सहज रूप से प्रेरित होते हैं और इस दुनिया को समझते हैं। पर हो सकता है यही सहजता और प्रेरणा, स्कूली विषयों को सीखने समझने के लिए न हो। बाल विकास से परिचित कराने के पीछे यही उद्देश्य रहेगा कि शिक्षक, बच्चों व उनके बौद्धिक और सामाजिक–भावनात्मक विकास संबंधी गहरी सैद्धान्तिक एवं बारीक समझ को हासिल कर पायें। इससे उम्मीद की जा सकती है शिक्षकों में यह योग्यता पनपेगी कि ये पाठ्यचर्या, स्थान, जानकारी और सीखने का संयोजन करते समय समुचित निर्णय ले सकें, जो हो सकता है कि पहले तो बच्चों के बारे में प्रचलित बहुत ही आम धारणाओं और मान्यताओं के आधार पर लिए जाते रहे हों, और जो बच्चों के संबंध में सैद्धांतिक य जमीनी समझ के विपरीत रहे हो।

इसलिए एक विषय के रूप में, पिछले कुछ दशकों में बच्चों को समझने की दिशा में आये बदलावों को इसमें शामिल करना महत्वपूर्ण है। यह आनुवांशिक कारणों वाली मान्यता से निकलकर, व्यवहारवाद, फिर उससे निर्माणवाद और फिर सामाजिक निर्माणवाद तक आता है। बच्चों के विकास संबंधी एक बहुत ही आम प्रचलित जैविक कारणों वाली धारणा से हटकर, हम बच्चों को उनके बहुत ही विशिष्ट संदर्भों में समझने के महत्व को जान पाये हैं। यह सब व्यापक रूप से दूसरे विषय क्षेत्रों के प्रभाव से संभव हो पाया है जैसे कि, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, भाषा विज्ञान और मनोविज्ञान में हुए शोध और विकास। इस प्रश्नपत्र का एक और उद्देश्य यही रहेगा कि शिक्षक, बच्चों को उनके सामाजिक आर्थिक संदर्भ में समझ सकें। इस तरह यह प्रश्नपत्र बच्चों के बीच विविधता को समझने और उसे स्वीकारने, स्थान देने की दृष्टि प्रदान करेगा तथा छात्राध्यापकों को तदनुसार उनकी कक्षा आयोजित करने में मदद करेगा।

3. इकाईवार विभाजन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	अंक
1	विकास संबंधी दृष्टिकोण	15
2	शारीरिक– गत्यात्मक विकास	13
3	भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास	15
4	समाजीकरण का संदर्भ	15
5	बचपन	12
आंतरिक अंक		30
कुल योग		100

इकाई 1. विकास संबंधी दृष्टिकोण (Perspective in Development)

- **बाल विकास का परिचय** : वृद्धि, विकास एवं परिपक्वता की अवधारणा, विकास के संबंध में विविध दृष्टिकोण की अवधारणा एवं परिचय, मानविकी मनोविज्ञान एवं विकासात्मक सिद्धान्त।
- **बाल विकास के अध्ययन की स्थायी विषयवस्तु** : बहुआयामी एवं बहुलता रूप में विकास, जीवनकाल में सतत् रूप से विकास, विकास पर सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव।
- **बाल विकास के अध्ययन के लिए विभिन्न प्रविधियां**: प्रकृतिवादी अवलोकन, साक्षात्कार, विशिष्ट झलकियां एवं वर्णात्मक कथाएं, पियाजे का बाल विकास का सिद्धान्त।
- **बच्चों की समावेशी शिक्षा** : अवधारणा और प्रविधियां।

इकाई 2. शारीरिक– गत्यात्मक विकास (Physical-Motor Development)

- शारीरिक – गत्यात्मक विकास, वृद्धि एवं परिपक्वता।
- शारीरिक– गत्यात्मक विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराने में अभिभावक एवं शिक्षकों की भूमिका, जैसे खेल आदि।

इकाई– 3. भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास (Langauage, Social and Emotional Development)

बोलना एवं भाषा विकास

- पूर्व–भाषायी संप्रेषण
- भाषा विकास की अवस्थाएं
- भाषा विकास के स्रोत : घर, शाला एवं मीडिया
- भाषा के उपयोग : संवाद एवं वार्तालाप में बच्चों की बातचीत को सुनना
- संवाद में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नताएं : उच्चारण
- संप्रेषण के विभिन्न तरीके और कहानी कहना

सामाजिक विकास

- सामाजिक विकास में परिवार, सहपाठियों एवं स्कूल की भूमिका
- सामाजिक विकास में स्पर्धा, अनुशासन, पुरस्कार एवं दण्ड की भूमिका
- संवेगों की आधारभूत समझः गुस्सा, डर, चिंता, खुशी आदि।
- संवेगों का विकास, संवेगों के कार्य, बाल्वी का लगाव सिद्धांत

इकाई 4. समाजीकरण का संदर्भ (Context of Socializaltion)

- समाजीकरण की अवधारणा एवं प्रक्रियाएं।
- समाजीकरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएं।
- परवरिश, परिवार एवं वयस्क एवं बच्चों के बीच संबंध, पालन पोषण के तरीके, बच्चों का अभिभावकों से अलग रहना, झूलाघरों में रहने वाले बच्चे, अनाथालय।
- स्कूलिंग : शिक्षक बालक का साथ संबंध एवं शिक्षक की भूमिका
- सहपाठियों के साथ संबंध : साथी मित्रों के साथ संबंध, स्पर्धा एवं सहयोग, बचपन के दौरान उग्रता एवं शरारत।
- सामाजिक सिद्धान्त एवं लैंगिक (जेंडर) विकास : लिंग आधारित भूमिकाओं का आशय, लिंग आधारित भूमिकाओं पर प्रभाव, रूढ़ वादिता, खेल के मैदान में लिंग (पहचान) का प्रभाव।
- शाला त्यागी की समस्या।

इकाई 5. बचपन (Childhood)

- बालश्रम, बाल शोषण, गरीबी, वैश्वीकरण विद्यालय से गैरहाजिरी की समस्या एवं वयस्क संस्कृति के संदर्भ में बचपन
- बचपन की धारणा में समानताएं एवं विविधताएं और खासतौर से भारतीय संदर्भ में किस तरह बचपन पनपते हैं।

4.0 अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए कक्षा में परिचर्चा।
- पाठ सामग्री/शोध पत्रों का गहन पाठन।
- असाइनमेंट में उठाये गये मुद्दों और सरोकारों का व्यक्तिगत रूप से एवं समूह में प्रस्तुतीकरण।
- सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास कार्य/अन्वेषण, संकलित अवलोकनों, जानकारियों का विश्लेषण एवं वर्णन

5.0 सत्रगत कार्य (Assignment)

बच्चे के संसार में झांकना : क्या और कैसे–1

(लोगों के बीच जाना, रिकार्ड तैयार करना व कक्षा में चर्चा)

नोट : निम्नांकित में से कोई तीन प्रायोगिक कार्य लिये जा सकते हैं–

5.1 प्रायोजना कार्य–1

विद्यार्थी, अखबार में प्रकाशित कोई दस आलेखों को संकलित करेंगे, जिसमें बच्चों के लालन पालन और बचपन से संबंधित मुद्दे होंगे। विद्यार्थी इनका विश्लेषण करेंगे और कक्षा में चर्चा करेंगे।

5.2 प्रायोजना कार्य–2

बच्चों और बचपन के विविध संदर्भों का अध्ययन करने की विधियों का प्रत्यक्ष अनुभव करने के मौके।

विद्यार्थी, विविध पृष्ठभूमि वाले 5 से 14 साल तक की उम्र के बच्चों को समझने के लिए किसी भी बच्चे को ले सकते हैं और उसका अध्ययन करने के लिए केस प्रोफाइल विधि का इस्तेमाल कर सकते हैं। शिक्षक प्रशिक्षक, अलग–अलग विद्यार्थियों द्वारा लाई गई विभिन्न प्रोफाइल से चुनकर कक्षा को इस तरह संयोजित कर सकता है

कि विविध सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों की जानकारी प्रस्तुत हो सके। इससे व्यापक दायरे में जानकारी मिलेगी जिसे बाद में समूहों में चर्चा कर विश्लेषित किया जा सकता है। यह कार्य हाशियाकृत बचों, पहली पीढ़ी के अधिगमकर्ता, सड़कों पर जीने एवं झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों, विशेष जरूरतों वाले बच्चों को समझने और उनकी विकासात्मक व शैक्षिक जरूरतों में सहयोग करने में मददगार हो सकेगा।

केस प्रोफाइल विधि में अवलोकन और साक्षात्कार जैसे साधनों का उपयोग, सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों, बच्चों के लालन पालन के तरीकों, स्कूल से अपेक्षाओं और बच्चों के सपनों व कल्पनाओं का अध्ययन करने में किया जा सकता है।

5.3 प्रायोजना कार्य–3

गिजूभाई बधेका की पुस्तक दिवास्वप्न का अध्ययन करते हुए बचपन और बच्चों को कैसे सिखाए पर आलेख तैयार करें।

5.4 प्रायोजना कार्य–4

विद्यार्थी एक फिल्म देखेंगे, जैसे कि सलाम बॉम्बे या तारे जमीं पर या कोई अन्य संबंधित फिल्म। फिल्म का चुनाव शिक्षक और विद्यार्थी संयुक्त रूप से मिलकर करेंगे। बाद में मिलकर उसमें दिखाये गये बच्चों के चित्रण पर अपनी राय और अनुभूति साझा करेंगे। इसमें विविध पृष्ठभूमि के बच्चों और उनके बचपन पर चर्चा की जा सकेगी।

5.5 प्रायोजना कार्य–5

विद्यार्थी, विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले 4–5 अभिभावकों से, बच्चों के लालन पालन एवं परवरिश के तरीकों के संदर्भ में साक्षात्कार करेंगे और फिर अपनी रिपोर्ट कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

शिक्षण के लिए निर्देश : उपरोक्त प्रायोगिक कार्य हेतु योजना बनाना, विद्यार्थियों को जोड़ियों या समूह में कार्य आवंटित करना, अधिकतम स्थानीय संसाधनों एवं उपलब्ध आई सी टी का उपयोग कर शिक्षण एवं प्रगति का आकलन किया जाना है।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंडल
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- माथुर, एस.एस. (द्वितीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी.डी. (चालीसवाँ संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- पाण्डेय, रामशकल (तृतीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर

- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- जॉन होल्ट– बच्चे असफल क्यों होते है ? एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
- राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा कक्षागत प्रक्रियाओं पर विकसित सामग्री
- राज्य शिक्षा केन्द्र की वेवसाइट www.ssa.mp.gov.in
- एज्युकेशन पोर्टल www.mp.gov.in/education portal.
- बाल विकास – डॉ. ओ.पी. सिंह
- छात्र का विकास एवं शिक्षण – डॉ. आर.ए.शर्मा
- बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान –प्रो. सुरेश भटनागर
- बचपन और बाल विकास – पी.डी. पाठक, अग्रवाल पब्लि. आगरा
- बचपन और बाल विकास – श्रीमति शर्मा, डॉ. बरौलिया एवं प्रो. दुबे राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
- Developmental Psychology & H.E.
- Sasaswati T.S.(Ed.) (1999) Culture Socialigation & Human Development] Theory Reearch & Applications in india, Sage Publications.
- Chapter 9: Physical Development in Middle Childhood.
- Mukunda, K.V. (2009) Chapter is Child Development, 79-96.s
- Post- Colnial Indian Childhood, Sharda Balgopal.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड प्रथम वर्ष

विषय : समसामयिक भारतीय समाज में षिक्षा

Education in contemporary Indian Society

(प्रश्न पत्र – 2)

पूर्णांक – 100

बाह्य अंक – 70

आंतरिक अंक – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

इस पाठ्यक्रम में उन परिस्थितियों और मुद्दों को सम्मिलित किया गया है, जो भारत में लोगों के जीवन पर असर डालते हैं और उसका स्वरूप तय करते हैं। छात्राध्यापक भारतीय समाज के ऐतिहासिक, राजनैतिक आर्थिक उतार–चढ़ाव के बारे में नजरिया बना पायेंगे। यह पाठ्यक्रम भारत की राजनीति, संस्थानों, अर्थव्यवस्था, समाज और मुद्दों से रूबरू कराता है। किसी शिक्षक के लिए, हमारे भारतीय समाज की एक समालोचनात्मक समझ प्रस्तुत करना बड़ा कठिन हो जाता है। बच्चों के सामाजिक संदर्भों और उनके विविध जीवन अनुभवों को ध्यान में रखते हुए बात रख पाने की चुनौती उसके सामने होती है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयवस्तु व मुद्दों के जटिल स्वरूप की एक व्यापक समझ के लिए सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में इसे ढाला गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों व शिक्षकों को समालोचनात्मक ढंग से सोचने और एक व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अपने निजी व सामान्य मत मान्यता को देख पाने में सक्षम बनाता है।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- अवधारणाओं, विचारों और सरोकारों के अंतर–विषयक विश्लेषण से परिचित होना।
- भारतीय समाज के सामाजिक–राजनैतिक आर्थिक आयामों से परिचित कराना और इसकी विविधता को सराहना।
- समसामयिक भारतीय समाज में व्याप्त एवं प्रचलित मुद्दे और प्रस्तुत चुनौतियों की समझ विकसित करना।
- भारतीय समाज की उपलब्धियों, लगातार बनी रहने वाली समस्याओं और प्रस्तुत चुनौतियों को समझने की दिशा में विशिष्ट राजनैतिक संस्थानों, आर्थिक नीतियों और सामाजिक संरचनाओं के बीच संबंधों को समझना।

पाठ्यक्रम की इकाईयों में समसामयिक समाज के राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। पाठ्यवस्तु के सीखने–सिखाने के लिए छात्राध्यापक इन सभी कारकों से रूबरू हो, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रत्येक इकाई की पाठ्य सामग्री एक दूसरे में गुंथी हुई है। इन सभी पहलुओं को पृष्ठभूमि में रखते हुए ही समसामयिक भारत की एक अर्थपूर्ण समझ विकसित की जा सकती है। यह पाठ्यक्रम एक समाजशास्त्रीय, समालोचनात्मक ढंग से सोचने व सवाल उठाने वाले नजरिये की पृष्ठभूमि बनाता है। छात्राध्यापकों से अपेक्षा है कि वे अपनी पूर्व धारणाओं का विश्लेषण करें और उससे परे जाकर सोच पायें।

3. इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा	15
2	2	समाज व शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य	15
3	3	भारतीय संविधान एवं शिक्षा	15
4	4	शिक्षा में समकालीन मुद्दे एवं सरोकार	15
5	5	सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक	10
आंतरिक अंक			30
कुल अंक			100

इकाई 1 : राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा (State, Politics and Indian Education)

- राज्य एवं शिक्षा
- शिक्षा की राजनैतिक प्रकृति
- नव आर्थिक सुधार एवं शिक्षा पर उनका प्रभाव
- सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा
- सार्वजनिक शिक्षा का निजीकरण
- हाशियाकृत (marginalised) एवं सामाजिक रूप से वंचितों की शिक्षा
- भारत में शिक्षा के अवसरों की समानता लाना

इकाई 2 : समाज व शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य (Perspectives on Society and Schooling)

- भारत में वर्ग, जाति, धर्म, परिवार एवं राजनीति के विशेष संदर्भ में सामाजिक संरचना एवं शिक्षा
- संस्कृति एवं शिक्षा
- आधुनिकीकरण, सामाजिक बदलाव एवं शिक्षा

इकाई 3 : भारतीय संविधान एवं शिक्षा (Constitution of India and Education)

- स्वतंत्र भारत की संवैधानिक दृष्टि : तथ और अथ
- संविधान एवं शिक्षा : शिक्षा की समवर्ती स्थितियाँ , शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान
- विशिष्ट संदर्भों से जुड़े बच्चे (जाति, वर्ग, धर्म, भाषा एवं लिंग) और शिक्षा से संबंधित नीतियां, अधिनियम एवं प्रावधान
- (प्रारंभिक शिक्षा की विभिन्न शैक्षिक नीतियाँ एवं उनका क्रियान्वयन व प्रभाव)
- भारतीय संविधान में समता एवं न्याय, भेदमूलक शाला प्रणाली (differential school) एवं समान पड़ोस शाला (common neighbour school) प्रणाली का विचार
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 एवं म.प्र. नियम 2011

इकाई 4 : शिक्षा में समकालीन मुद्दे एवं सरोकार (Contemporary Issues and Concerns in Education)

- लोकतंत्र एवं शिक्षा
- उदारीकरण एवं शिक्षा
- वैश्वीकरण एवं शिक्षा
- खेतिहर, दलित एवं नारीवादी आन्दोलन और शिक्षा पर उनके प्रभाव
- समानता, निष्पक्षता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लोकतंत्रीयकरण

इकाई 5 : सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक (Teacher as Social Transformer)

- एक चेतनशील बुद्धिजीवी के रूप में शिक्षक
- शिक्षक की भूमिका एवं दायित्व
- शिक्षक नैतिकता
- शिक्षक एवं सामुदायिक विकास
- सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक

8. सत्रगत कार्य:– (Assignments)

समसामयिक भारतीय समाज में शैक्षिक चुनौतियों के संदर्भ में नियत कार्य एवं प्रायोजना कार्य – कुल तीन कार्य दिये गए हैं। प्रत्येक खंड में से एक कार्य लिखिए।

खंड 'अ' नियत कार्य – (Assignments)

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्रारंभिक शिक्षा हेतु की गई अनुशंसाओं की सूची बनाइए।
- प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के पूर्व और पश्चात् हुए शालेय तंत्र में बदलाव का तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन कीजिए।
- सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की सूची बनाइए । किसी एक योजना के मूलभूत लक्ष्य, उद्देश्य एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया लिखिए।
- बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह हेतु शिक्षा के प्रावधानों एवं शैक्षिक विकास पर इनके प्रभाव लिखिए।
- शिक्षा का अधिकार लागू होने के पश्चात् आपके क्षेत्र में हुए सामयिक बदलाव पर आलेख तैयार कीजिए।
- अपने जिले की विभागीय संरचना को स्पष्ट करते हुए फ्लोचार्ट बनाइए।
- आर्थिक विकास में प्रारंभिक शिक्षा की भूमिका की तर्क युक्त विवेचना कीजिए।
- अपनी शाला में संवैधानिक प्रावधान (RTE 2009) की धारा 19 के तहत मानक एवं मापदंडों के अनुरूप शालेय संसाधनों की समीक्षा कीजिए।
- अपने क्षेत्र में अल्पसंख्यकों/सुविधावंचित बच्चों हेतु संचालित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की सूची बनाते हुए किसी एक संस्था के कार्य, प्रक्रिया एवं उपलब्धि पर आलेख तैयार कीजिए।
- अपने ग्राम के VER में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, प्रवेश एवं उन्हें प्राप्त सुविधाओं की स्थिति पर आलेख तैयार कीजिए।
- किन्ही 5 प्राथमिक शालाओं में राष्ट्रीय एकता विकास के लिए बच्चों हेतु विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाईए।
- **ABL** अथवा **ALM** शिक्षण पद्धतियों के क्रियान्वयन में आने वाली व्यावहारिक कठिनाईयों की सूची बनाईए एवं इनके निराकरण के सुझाव लिखिए।
- शाला में उपलब्ध बाल पुस्तकालय/ विज्ञान/गणित किट आदि के माध्यम से बच्चों के बेहतर सीखने – सिखाने की योजना तैयार कीजिए।
- अपनी शाला में हेतु किसी एक विषय में बहुकक्षा शिक्षण / बहुस्तरीय शिक्षण हेतु कार्य योजना बनाईए।

खंड 'ब' प्रोजेक्ट कार्य (Porject Work)

- अपने ग्राम/ वार्ड के 20 परिवारों का सर्वेक्षण कर ग्राम शिक्षा पंजी तैयार कीजिए।
- अपने ग्राम /वार्ड के 6 से 14 आयु वर्ग के अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यक छात्रों की जनसंख्या, वर्ग व शिक्षा की जानकारी एकत्र कीजिए।
- अपने ग्राम /वार्ड के सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़े 10 परिवारों के 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की शैक्षिक कठिनाईयों की सूची बनाइए एवं इनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए कार्य योजना तैयार कीजिए।
- आपके क्षेत्र /जिले में विशेष समूह के बच्चों के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं में से किसी एक योजना प्रभाव का अध्ययन कीजिए (किन्ही 5 बच्चों /पालकों के साक्षात्कार के माध्यम से)
- ABL पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए।
- ALM पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए।
- विद्यालय के बच्चों में राष्ट्रीय एकता विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाइए एवं इसका त्रैमासिक केलेण्डर तैयार कीजिए।
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के संदर्भ में कमजोर एवं वंचित समूह बच्चों के प्रवेश प्रक्रिया का किन्ही दो विद्यालयों में जाकर अध्ययन कीजिए (किन्ही 5–5 बच्चों एवं उनके पालक के साक्षात्कार के माध्यम से)
- आपके क्षेत्र के प्रथम पीढ़ी की शिक्षा प्राप्त करने वाले परिवार एवं शिक्षित परिवारों में सामाजिक अंधविश्वास/कुरीतियों की स्थितियों की तुलना कीजिए । (किन्ही 5 परिवारों के संदर्भ में)
- अपने क्षेत्र पलायन करने वाले परिवारों के शाला जाने योग्य बच्चों की जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनके शैक्षिक विकास हेतु किए गए प्रयासों की जानकारी एकत्र की कीजिए।

खंड 'स' समकालीन भारतीय मुद्दों पर सुझाई गई कुछ परियोजनाएँ :

मध्यप्रदेश के संदर्भ में– जिसमें कक्षा में परिचर्चा करवाई जाए/आलेख लिखवाए जाए।

- किसी शैक्षणिक संस्थान में अपनाए जाने वाले संवैधानिक मूल्यों का समालोचनात्मक मूल्यांकन।
- विभिन्न कार्यस्थलों का तुलनात्मक अध्ययन।
- मध्यप्रदेश में सामाजिक द्वंद और आन्दोलन : महिला, दलित और आदिवासी आन्दोलन, विस्थापन, भूमि, मानवाधिकार, सांप्रदायिक आन्दोलन।
- विस्थापन और विकास
- शैक्षिक बहस और आन्दोलन
- स्कूल में पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चे

- लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका
- भारत में बचपन को समझना
- मीडिया में समकालीन बहस का विश्लेषण
- शान्ति के लिए शिक्षा
- शिक्षा का अधिकार कानून में बच्चे और स्कूल की स्थिति
- स्कूल में भाषा
- किसी खेती या औद्योगिक उत्पाद के प्रारंभ से वर्तमान तक का ब्यौरा हासिल करना
- हाशियाकरण को उत्पन्न करने और उसे हल करने में राज्य और अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था की भूमिका
- भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता
- अल्पसंख्यक अधिकारों का महत्व
- भारत में दलितों, आदिवासियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों की शैक्षणिक स्थिति, अवसर एवं अनुभव
- वंचित बस्तियों में रहने वाले एवं पलायन का दंश झेलने वाले बच्चों का हाशियाकरण एवं उनकी शिक्षा
- द्वंदों के टकरावों के परिप्रेक्ष्य में बहुलवादी शिक्षा की चुनौतियां
- बच्चों पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव
- वर्तमान में युवा संस्कृति एवं इंटरनेट व अन्य दृश्य माध्यमों के प्रभाव को समझना

अंतरण के तरीके : Mode of Transaction

- शिक्षकों को अपने अध्यापन में परिचर्चा, परियोजना, डॉक्यूमेन्ट्रीज, फिल्में और फील्ड प्रॉजेक्ट को शामिल करना चाहिए।
- सघन और समालोचनात्मक पठन हो, साथ ही विभिन्न आलेखों, नीति दस्तावेजों, पाठ्यसामग्री, डॉक्यूमेन्ट्रीज और फिल्मों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- छात्राध्यापक समूह में फील्ड आधारित प्रोजेक्ट करें और अपनी जानकारियों व निष्कर्षों को विश्लेषणात्मक ढंग से लिख पाने में सक्षम बनें।
- संवाद और परिचर्चा ही इस पाठ्यवस्तु को सिखाने के प्रमुख तरीके होंगे।

9. सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथों की सूची

- राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत प्रकाशित निर्देश एवं पाठ्य सामग्री।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग) भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सामग्री
- जनशिक्षा अधिनियम 2002 और जनशिक्षा नियम 2003
- बालशिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं मध्यप्रदेश नियम 2011

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का दस्तावेज
- प्राथमिक शिक्षक एन.सी.ई.आर.टी. एवं एन.यू.ई.पी.ए. नई दिल्ली द्वारा प्रारंभिक शिक्षा संबंधी प्रकाशन
- शैक्षिक पलाश – मध्यप्रदेश शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल द्वारा प्रकाशित
- शिक्षा का सिद्धान्त – पाठक एवं त्यागी
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार– डॉ. सरोज सक्सेना
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त – एन. आर. स्वरूप सक्सेना
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठिभूमि – रामशकल पाण्डेय
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त – रमन बिहारी लाल
- सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा – उमराव सिहं चौधरी
- शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय आधार –एस.पी. चौबे
- शिक्षा का समाज शास्त्र – चन्द्रा एवं वर्मा
- शिक्षा दर्शन – आर.एन. शर्मा
- फाउण्डेशन ऑफ एज्यूकेशन – एस. भट्टाचार्य
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका – मंजरी सिन्हा य डॉ आई.एम.सिन्धु आगरा
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका – श्रीमति निर्मला गुप्ता य श्रीमति अमृता गुप्ता साहित्य प्रकाश आगरा
- विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा – राजस्थान हिन्दी अकादमी द्वारा प्रकाशित
- इन्टरनेट से शैक्षणिक क्षैत्र की विभिन्न संस्थाओं की वेबसाइट
- समसामायिक भारतीय समाज, पाठ्यचर्या एवं शिक्षार्थी – श्रीमति शर्मा, डॉ. बरौलिया एवं प्रो. दुबे, राधा प्रकाशन मंदिर आगरा।
- समसामायिक भारतीय समाज, पाठ्यचर्या एवं शिक्षार्थी – गुरूसरनदास, अग्रवाल पब्लि. आगरा।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

पूर्व बाल्यावस्था–परिचर्या एवं शिक्षा

Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)

(प्रश्न पत्र – 3)

पूर्णांक अंक –100

बाह्य मूल्यांकन – 70

आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and aim)

प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं उसकी शिक्षा विश्व में एक उच्च प्राथमिकता से उभरने वाले क्षेत्रों में से एक है। तंत्रिका विज्ञान (Neuro science) की नई शोध कहती है कि नब्बे प्रतिशत मस्तिष्क का विकास 5 साल की उम्र तक होता है और इस विकास पर न केवल पोषण एवं सेहत का असर होता है, बल्कि इन सालों में बच्चे को मिलने वाले मनोसामाजिक अनुभवों का भी गहरा असर पड़ता है। पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चों की एक बड़ी संख्या अब विद्यालयी व्यवस्था में आ रही है। ये बच्चे ऐसे घरो से आ रहे हैं जहाँ सीखने का वातावरण अपर्याप्त है। इससे दुनियाभर में विद्यालय प्रारंभिक लिखने पढ़ने और गणित की दक्षताओं के बिना ही अगली कक्षा में पहुँच रहे हैं। एक महत्वपूर्ण कारक यह देखा गया है कि बच्चे स्कूल के लिए पर्याप्त तैयारी के बिना ही सीधे शाला में आ रहे है जबकि यह तैयारी उन्हें आवश्यक अवधारणात्मक एवं भाषात्मक आधार दे सकती है। शोध से यह बात उभरी है कि प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) यदि सही उम्र में मिले तो इस अंतर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) जो छः वर्ष तक की उम्र के लिए थी उसे अब दुनियाभर में जन्म से आठ साल तक की वर्ष की देखभाल और शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जा रहा है। इस तरह से प्राथमिक स्कूल के पहले दो से तीन साल भी इस में सम्मिलित है। इसके पीछे यह तर्क है कि बाल विकास के सिद्धांत के अनुसार छः से आठ साल के बच्चें अपने विकास लक्षणों और रूचियों में छोटे बच्चों से ज्यादा समानता रखते हैं और उनकी जरूरते भी एक सी होती है। परिणामस्वरूप प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) में खेल और गतिविधि आधारित विधियाँ इनके लिए ज्यादा उपयुक्त होती है और इसके साथ यह कि शाला पूर्व प्राथमिक वर्षों को एक समान अवस्था में या एक इकाई के रूप में मिलाने से बच्चे के सीखने की प्रक्रिया को सतत् बनाए रखने में मदद मिलती है। इससे बच्चों की लचीले रूप से और अपनी गति के अनुसार सीखने की प्रक्रिया चल पाती है और औपचारिक रूप से सीखने की तरफ बढ़ना आसान हो जात है। प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में दो उप–अवस्थाएं सम्मिलित है–

पूर्व प्राथमिक अवस्था 3 से 6 साल–

प्राथमिक अवस्था या कक्षा 1 एवं 2 (6 से 8 साल) बच्चों के बेहतर मानसिक विकास एवं जीवन पर्यन्त सीखने तथा अपने आगामी जीवन में एक अच्छा नागरिक जो एक जिम्मेदार समाज की संरचना कर सकें। बच्चें

के प्रारंभिक वर्षो में हर चीज को अपनी तर्क शक्ति तथा जिज्ञासा से परखने की क्षमता को बढ़ाया जाये उसमें ऐसे गुणों का विकास किया जाये ताकि वह किसी बात को सीधे मनाने की बजाए उसकी उपयोगिता और महत्ता मे से सम्बधित प्रश्न करें और संतुष्ट होने पर ही उसे स्वीकार करे, ताकि वह भीड़ का हिस्सा न बने और उसमें नेतृत्व करने की क्षमता का विकास हो।

शिक्षक भी तभी अपनी शिक्षा देने की पद्धति से संतुष्ट हो जब बच्चा हर पाठ की समाप्ति पर या कक्षा के दौरान प्रश्न करें।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- जीवन पर्यन्त सीखने और विकास के आधार के रूप में प्रारंभिक बचपन के वर्षों की परिभाषा और महत्व को समझना।
- पूर्व, मध्य एवं पश्च बचपन के वर्षों में बालक के गुणों, विकास की जरूरतों के अनुसार संवेदनाओं का विकास करना और प्राथमिक शिक्षा में उसका क्रियान्वयन करना।
- विकास के संदर्भ में उपयुक्त प्रारंभिक बचपन में देखभाल एंव शिक्षा (ECCE) की पाठ्यचर्या और विद्यालयीन शिक्षा के लिए उसके महत्व एवं सिद्धांत व विधियों को समझना।
- प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) में घर पर रह कर सीखना (Home School) और समुदाय से जुड़ाव के महत्व को समझना।

3. इकाईवार अंक विभाजन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	अंक
1	प्रारंभिक बचपन में देखभाल एंव शिक्षा की परिभाषा प्रकृति एवं महत्व	20
2	विकास की दृष्टि से समुचित प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धांत और विधियाँ	20
3	बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबंधन	15
4	बच्चों के प्रगति का आंकलन	15
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई :1 प्रारंभिक बचपन में देखभाल एंव शिक्षा की परिभाषा प्रकृति एवं महत्व
(Definition, Nature and Significance of Early Childhood and Education)

- प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की समग्र पाठ्यचर्या की परिभाषा एवं उद्देश्य।
- जीवन पर्यन्त सीखने एवं विकास में प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को महत्वपूर्ण अवधि के रूप में महत्व जानना।
- अधिगम को सुगम बनाने के लिए प्रारंभिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की अवधि को आठ साल की उम्र तक बढ़ाने संबंधी तर्क।
- विद्यालयों में प्रारंभिक अधिगम की चुनौतियाँ एवं शाला पूर्व तैयारी की अवधारणा।

इकाई : 2 विकास की दृष्टि से समुचित प्रारंभिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धांत और विधियाँ (Principles and Methods of Developmentaly Appropriate ECCE Curriculum)

- बच्चे कैसे सीखते हैं : प्रारंभिक, मध्य एवं बाद के बचपन तक अवस्थावार विशिष्टताएँ।
- प्रारंभिक वर्षों में सीखने के लिए खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का महत्व।
- बच्चों के समग्र विकास के क्षेत्र एवं गतिविधियाँ ।
- प्रारंभिक वर्षों में साक्षरता एवं अंक ज्ञान।

इकाई : 3 बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबंधन
(Planning and Mannagement of ECCE Curriculum)

- सुगठित एवं संदर्भयुक्त पाठ्यचर्या की योजना के सिद्धांत
- दीर्घ एवं अल्पकालिक उद्देश्य एवं योजना
- परियोजना विधि एवं विशिष्ट कार्यक्षेत्र केन्द्रित उपागम (Approach)
- विकास की दृष्टि से उपयुक्त एवं समावेशी कक्षा प्रबंधन

इकाई : 4 बच्चों के प्रगति का आकलन (Assessing Children's Progress)

- प्रारंभिक बचपन में सीखने एवं विकास के मापदन्ड
- बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं उसका अभिलेखीकरण
- बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन
- घर और शाला के बीच जुड़ाव सुनिश्चित करना

4. सत्रगत कार्य (Assignment) कोई– 3

1. प्रारंभिक बचपन के वर्षों (3–8 वर्ष) के लिए कोई दो स्थानीय खेलों/गतिविधियों को लिखिए एवं उसके द्वारा होने वाले विकास पर रिपोर्ट प्रस्तुत करें।
2. किसी आंगनवाड़ी केन्द्र का भ्रमण कर बच्चों को ऊँचाई और वजन का तुलनात्मक अध्ययन कर स्वास्थ्य सम्बन्धी विश्लेषण प्रस्तुत करना।
3 कक्षा 1 में आगंनवाड़ी से अध्ययन करके पहुँचे बच्चे एवं सीधे शाला आने वाले बच्चों की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
4 शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए कक्षा में परिचर्चा।
- पाठ सामग्री/शोध पत्रों का गहन पाठन।
- सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास कार्य/अन्वेषण, संकलित अवलोकनों, जानकारियों का विश्लेषण एवं वर्णन

नोट– इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अन्य सम्बंधित प्रयोजना कार्य दे सकते हैं।.

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथों की सूची

1 राजलक्ष्मी मुरलीधरन एवं शोभिता अस्थाना– शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ

2 शिशु शिक्षा संदर्शिका – म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

3 शिशु शिक्षा एवं देख–भाल – मीना स्वागीनाथन

4 NCERT, (2006). Position paper: National Focus Group on ECE, New Delhi.

5 (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड.प्रथम वर्ष

भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास

Understanding Language and Early Language Development

(प्रश्न पत्र–4)

पूर्णांक – 50

बाह्य अंक – 25

आंतरिक अंक – 25

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

भाषा केवल संचार या संप्रेषण का माध्यम नहीं है बल्कि ऐसा माध्यम है जिससे ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यह एक ऐसी संरचना है जो हमारे आस–पास की वास्तविकता को व्यवस्थित करके हमारे मस्तिष्क में इसे प्रस्तुत करती है, इसका प्रतिनिधित्व करती है। भाषा केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नहीं होती, यह सभी दृष्टिकोणों, विषयों, गतिविधियों और संपूर्ण समाज में व्याप्त है। इसके महत्वपूर्ण पहलुओं के व्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता है।

इस प्रश्नपत्र का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षकों को कक्षा में, बच्चों के घर में, समाज में और राष्ट्र में भाषा किस तरह परिचालित होती है, इस बारे में जागरूक करना है। भाषा की कक्षाओं में शिक्षण एवं निर्देशों के लिए योजना बनाते समय सिद्धांतों से जुड़ाव बनाए रखना भी इस प्रश्नपत्र का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि भाषा हम सभी के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। यह केवल संप्रेषण के लिए ही आवश्यक नहीं है वरन यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विविध क्षेत्रों में ज्ञान हासिल किया जाता है। चिंतन, तर्क करना, निर्णय लेना आदि सभी कार्य भाषा के कारण ही संभव हो पाते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि हम कोई भी काम भाषा के जरिए और भाषा के साथ ही करते हैं। भाषा हमारे चारों ओर चल रही घटनाओं व बातों को स्वरूप देती है और फिर हमारे मस्तिष्क में इसे व्यक्त करती है।

इस प्रश्नपत्र का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को भाषा की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करना है जैसे भाषा से क्या आशय है? भाषा के अंतर्गत क्या–क्या आता है? भाषा के कार्य क्या है? भाषा, विचार और समाज के बीच क्या संबंध हैं आदि।

विशिष्ट उद्देश्य : (Specific Objectives)

- भाषा की प्रकृति एवं संरचना से प्रतिभागियों को परिचित कराना।
- भाषा के कार्यों के प्रति जागरूक बनाना
- प्राथमिक कक्षाओं में स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद परिप्रेक्ष्य में भाषा के महत्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना।
- विभिन्न भाषाई कौशलों एवं उनके विकास के तरीकों को समझना
- भाषा, विचार एवं समाज के अंर्तसबंधों को समझना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं की प्रकृति, उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना
- व्याकरण को पाठ्यवस्तु के साथ रचनात्मक तरीके से जोड़ते हुए पढ़ाने के तरीकों को समझना

अच्छा शिक्षण शास्त्र वही होता है जो विषय की प्रकृति, शिक्षार्थी और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए संयोजित किया जाए।

इकाईवार अंको का विभाजन –

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	भाषा क्या है (What is Language)	2
2	2	भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Listening & Speaking)	2
3	3	भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)	2
4	4	भाषा की कक्षा (Language Classroom)	2
5	5	भाषा कौशल क्या है (Developing Language Skills)	4
6	6	भाषाई कौशल का विकास (Developing Language Skills)	4
7	7	साहित्य (Literature)	3
8	8	पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding text book and Pedogogy)	3
9	9	कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom Planning and Evaluation)	3
		आंतरिक अंक	25
		कुल अंक	50

इकाई 1 भाषा क्या है (What is language)

- परिचय
- भाषा, विचार और समाज
- पशु एवं मानव संप्रेषण के बीच अंतर
- भाषा की विशेषताएँ, भाषा के कार्य
- भाषा की संरचना
- भाषा और उसमें निहित शक्ति

इकाई 2 भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Liestenig & Speaking)

- भाषा के बारे में संवैधानिक प्रावधान
- बहुभाषिकता की प्रकृति और कक्षा में इसका प्रभाव
- भाषाई विविधता– भारत एवं मध्यप्रदेश के संबंध में
- बहुभाषिकता– कक्षा संसाधन और रणनीति के रूप में

इकाई 3 भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)

- परिचय
- भाषा और बच्चे
- अधिग्रहण और सीखना
- प्रथम भाषा अधिग्रहण
- द्वितीय भाषा और विदेशी भाषाओं को सीखना

इकाई 4 भाषा की कक्षा (Language Classroom)

- परिचय
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य (aims & objectives)
- भाषा शिक्षण के वर्तमान तरीके और उनका विश्लेषण
- शिक्षक की भूमिका
- त्रुटियों की भूमिका

इकाई 5 भाषाई कौशल क्या है (Developing language skills) (1)

- परिचय–
- सुनना– सुनने से तात्पर्य
- बोलना– बोलने से तात्पर्य
- सुनने और बोलने के कौशल का विकास– संवाद, लघु नाटक, कहानी सुनाना, कविता सुनाना

इकाई 6 भाषाई कौशलों का विकास (Developing language skills) (2)

- परिचय
- साक्षरता और पढ़ना–पढ़ने से तात्पर्य
- वर्णनात्मक पाठ्यवस्तु को पढ़ना– पाठ्यवस्तु को समझना, आलेख का विस्तार करना, पठित सामग्री को अपने अनुभव से जोड़ना, नए अनुभवों को आलेख में शामिल करना, पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त भी विविध सामग्री को पढ़ पाना
- पढ़ने की रणनीतियाँ– पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद की रणनीतियाँ
- भाषा के विविध साधनों की समझ, बच्चों को अच्छा पाठक बनाना
- लेखन एक कौशल?
- पढ़ने और लिखने के बीच का संबंध
- लेखन कौशल का विकास करना, मौलिक लेखन कर पाना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बधित साहित्यिक उदाहरण दिए जाएँ जिससे कि पढ़ाना आसान हो।

इकाई 7 साहित्य (Literature)

- पाठ्यपुस्तक के प्रकार– कथात्मक एवं वर्णात्मक साहित्य से परिचय, उन्हें पढ़कर समझना, पाठ्यवस्तु के साथ संबंध स्थापित करना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण के उद्देश्य
- साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़कर समझना
- संपूर्ण पाठ्यक्रम में साहित्य का प्रयोग कर पाना।
- गद्य एवं पद्य को पढ़ाने की विधियाँ– व्याकरण–रचनात्मक तरीके

इकाई 8 पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षण शास्त्र की समझ (Understanding text book and pedogogy)

- भाषा की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत
- विषयवस्तु एवं उसके शिक्षण के तरीके
- पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु, उसके शिक्षण के तरीके, इकाइयों की रूपरेखा, अभ्यास कार्य की प्रकृति और उसकी बारीकियों का विश्लेषण
- अकादमिक मापदंड और सीखने के तरीके
- भाषा की कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री

इकाई 9 कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom planning and evaluation)

- कक्षा शिक्षण की तैयारी– भाषा की कक्षाओं की वार्षिक एवं कालखण्डवार कार्ययोजना बनाना
- आकलन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में अंतर (CCE)
- भाषा की कक्षा में रचनात्मक आकलन (पढ़ने–लिखने का आकलन)
- भाषा की कक्षा में योगात्मक आकलन (कौशल आधारित)

सत्रगत कार्य (Assignments)

निम्नलिखित खंड अ एवं ब में से एक–एक प्रयोजना कार्य कीजिए

खंड अ

- गतिविधि आधारित अधिगम (ए.बी.एल.)/सक्रिय अधिगम प्रविधि (ए.एल.एम.) की एक –एक पाठ योजना गद्य एवं पद्य की पृथक –पृथक तैयार कीजिए।
- भाषाई कौशलों के विकास हेतु एक प्रभावी पाठ योजना सहायक सामग्री सहित तैयार कीजिए।
- भाषा प्रयोगशाला के प्रत्यक्ष अवलोकनके अधार पर एक भाषाई खेल गतिविधि तैयार करें।
- भाषागत किसी एक समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोजना निर्माण कर संपादन कीजिए।
- भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए एवं मौखिक मूल्यांकन के लिए ब्लूप्रिंट के अनुसार किसी एक कक्षा का आदर्श प्रश्नपत्र तैयार कीजिए।

खंड ब

- विद्यालयीन पुस्तकालय में उपलब्ध साहित्य की विधाओं एवं लेखकों के नाम की सूची तैयार कीजिए । अपनी पसंद की किसी पुस्तक की समीक्षा लिखिए।
- आपके विद्यालय में पुस्तकालय के प्रभावी उपयोग की कार्य योजना तैयार कीजिए।
- किसी स्थानीय लोककथा को स्थानीय बोली और हिन्दी भाषा में लिखकर प्रस्तुत कीजिए।
- अपने आसपास के किसी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व के स्थल, मेले, त्योहार अथवा स्थानीय स्वतंत्रता–सेनानी के जीवनवृत्त में से किसी एक पर आलेख लिखिए।
- स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन कीजिए।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

- छात्राध्यापकों को पठन हेतु चयनित सामग्री प्रदान करना एवं उस पर चर्चा करना।
- छात्राध्यापकों को छोटे समूह में पठन हेतु अवसर देना एवं उसका प्रस्तुतिकरण करवाना, छूटी हुई बातों को समूह चर्चा द्वारा जोड़ना।
- प्रश्नोत्तर माध्यम से चर्चा एवं सहभागिता द्वारा छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना एवं विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
- छात्राध्यापकों को विषयवस्तु से संबंधित प्रायोजना कार्य देना एवं उसके प्रस्तुतिकरण से विषयवस्तु का विकास करना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. NCF-2005
2. भारतीय भाषाओं का शिक्षण–आधार पत्र NCERT–2005
3. हिन्दी भाषा शिक्षण– डॉ. प्रकाश चंद्र भट्ट
4. भाषा विज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी
5. भाषा की प्रकृति इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली
6. बच्चे की भाषा और अध्यापक – N.B.T. कृष्ण कुमार
7. भाषा शिक्षण– SCERT छत्तीसगढ़
8. भाषा और पहचान– डेविड क्रिस्टल
9. भाषा, बोली और समाज– देशकाल प्रकाशन
10. पढ़ने की समझ– NCERT, नई दिल्ली
11. लिखने की शुरुआत– NCERT, नई दिल्ली

12. पढ़ना सिखाने की शुरुआत– NCERT, नई दिल्ली
13. हिन्दी व्याकरण सार– डॉ. ब्रजरतन जोशी, पत्रिका प्रकाशन नई दिल्ली
14. राजभाषा हिन्दी – मनोज कुमार
15. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना– डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद
16. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – श्रीमति शर्मा एवं प्रो. दुबे, राधा पब्लिकेशन, आगरा।
17. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – भाई योगेन्द्र जीत, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
18. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

पाठ्यचर्या में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का एकीकरण

ICT integration across the Curriculum

(प्रश्न पत्र–5)

पूर्णांक : 100

बाह्य अंक : 50

आंतरिक अंक : 50

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

वर्तमान समय में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने एवं सम्प्रेषण करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है, तथा सम्प्रेषण तकनीकी का पाठ्यक्रम में समेकन विषय अध्ययन के द्वारा छात्राध्यापकों की कम्प्यूटर अनुप्रयोग की समझ विकसित होगी। आई सी टी का उपयोग किस प्रकार किया जाए, इसकी समझ पैदा होगी। यह विषय उनकी शिक्षण–अधिगम की समझ को विकसित करेगा। इसका उपयोग वे शिक्षण कक्ष में कर सकेंगे। यह आशा की जाती है कि यह तकनीकी उनके कक्षा शिक्षण में अत्यन्त उपयोगी होगी।

इस विषय के अध्ययन का अन्य उद्देश्य यह है कि इससे छात्राध्यापकों में अनुसंधान विधियों की समझ विकसित होगी जिसका उपयोग वे बहुआयामी संदर्भों में कर सकेंगे। वे निम्नांकित कार्यों हेतु सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग कर सकेगें।

- दस्तावेज तैयार करने हेतु
- प्रस्तुीकरण स्लाइड तैयार करने हेतु।
- सरल ग्राफिक्स बनाने के लिए
- शैक्षिक संदर्भों में उचित मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- स्कूल शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता समझना।
- अधिगम प्रक्रियाओं में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग के माध्यम से अधिगम को प्रभावी बनाना।
- विषय में छात्र मूल्यांकन/आकलन हेतु विभिन्न सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी माध्यमों को बढ़ावा देना।

- विभिन्न विषयों में उपलब्ध सूचना एवं तकनीकी साफ्टवेयर एवं टूल्स के उपयोग को बढ़ावा देना।
- उपलब्ध मुक्त शैक्षिक संसाधनों को उपयोग करना।
- शिक्षक को सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोगकर्ता के तौर पर योग्य, कुशल एवं संवेदनशील बनाना जिससे कि वह उचित समय पर उचित तकनीकी का प्रयोग कर सकें

इकाईवार अंको का विभाजन

क्र.	इकाई की संख्या	विषय का शीर्षक	अंक अधिभार
1.	1	स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार	15
2.	2	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	15
3	3	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन	10
4	4	विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग	10
आंतरिक अंक			50
कुल अंक			100

इकाई–1 स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार

शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी– परिभाषा, अर्थ एवं भूमिका

- शिक्षा में कम्प्यूटर
  हार्डवेयर– डाटा स्टोरेज, डाटा बैकअप
  सॉफ्टवेयर–सिस्टम सॉफ्टवेयर (विंडोस, लिनेक्स, एड्रोइड), एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (वर्ड, पावरपॉइंट, एमएस एक्सेल)
- इंटरनेट और इंट्रानेट– खोज करना, चयन करना डाउनलोड करना, अपलोड करना
- दस्तावेज़ निर्माण और प्रस्तुतीकरण– टेक्स्ट दस्तावेज निर्माण, स्प्रेडशीट निर्माण, पावरपॉइंट निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण (स्लाइड, चार्ट, कार्टून, चित्र के साथ)
- मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर)– अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व नेशनल रिपोजीटरी ऑफ ओईआर

ओईआर फॉर स्कूल्स– एचबीसीएसई, टीआईएफआर, एमकेसीएल एवं आई–कोन्सेंट का संयुक्त प्रयास अन्य जैसे– स्कूल फ़ार्ज, ओपेन सोर्स एडुकेशन फाउंडेशन, नेशनल सेंटर फॉर ओपेन सोर्स एंड एडुकेशन तथा फ्लॉसएड, ऑर्ग

इकाई–2 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

- मस्तिष्क आधारित अधिगम (बीबीएल)
- ई–लर्निंग एवं ब्लैंडेड लर्निंग
- एल 3 समूह रचना, कापरेटिव एवं कोलोब्रेटीव अधिगम
- पिलप्ड एवं स्मार्ट क्लासरूम, इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित अधिगम के वैकल्पिक तरीके– पैकेज (काई/ सीएएल पैकेज, मल्टीमीडिया पैकेज, ई–कंटैंट, एमओओसी), सोशल मीडिया (मोबाइल, ब्लॉग, विकि, व्हाट्सएप, चैट आदि)
- आभासी प्रयोगशाला (वर्चुअल लैब)– अर्थ एवं भूमिका
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित अधिगम संसाधन निर्माण (एडुकाप्ले आदि द्वारा)

इकाई–3 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन

- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित आंकलन/मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके– ई–पोर्टफोलियो, कम्प्यूटर आधारित प्रश्न बैंक आदि)
- आकलन रूब्रिक के निर्माण के लिए ऑनलाइन रुब्रिक जेनेरेटर जैसे– आरयूबीआईएसटीएआर, आईआरयूबीआरआईसी
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन टूल (एसओसीआरएटीआईवीई, पीआईएनजीपीओएनजी, सीएलएएसएस बीएडीजीईएस, सीएलएएसएसएमकेईआर आदि)
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित परीक्षण निर्माण टूल्स (एचओटीपीओटीएटीओ, एसयूआरवीईवाईएमओएनकेईवाई, जीओओजीएलई एफओआरआरएम आदि)

इकाई–4 विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग

- भौतिक विज्ञान आधारित– फीजिओन, ब्राइट स्टोर्म, कॉम, नासा वर्ल्ड वाइड
- रसायन विज्ञान आधारित– पिरियोडिक टेबिल क्लासिक, कलजिअम
- मेथ्स आधारित– जियो ज़ेबा, मेथ्सइसफन, सेज मेथ्स, खानएकदेमी, ओआरजी, टूक्स मेथ्स
- समाज विज्ञान आधारित– सेलास्टिया, जी कॉपरिस, वर्ल्ड वाइड टेलेस्कोप, जी कोम्प्रिस,

- भाषा आधारित–ब्राइट स्टोर्म, कॉम,
- अन्य (नॉलेज एडवेंचर, माइंड जीनियेस, डिज़्नी इंटरैक्टिव, द लर्निंग कंपनी, थिंकिंगब्लोक्क्स)
- कार्यशालाओं के माध्यम से।
- करके सीखने के अवसर देना।

अंतरण की विधियाँ Mode of Transaction

- कम्प्यूटर लैब के माध्यम से ।
- इंटरनेट का उपयोग करते हुए।
- डाउनलोड और अपलोड करके सिखाना।
- इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड के माध्यम से ।
- लैपटॉप की सहायता से।
- मोबाइल के एप से।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

best sites for free educational resorces

- http://www.resfseek.com/directory/education_video.html
- http://www.marcandangel.com2010/11/15/12-dozen-places-to-self-educate-yourself-online/
- http://www.jumpstart.com/parents/resources
- http://opensource.com/education/13/4/guide-open-source-education

Additional Reference Material & Resource Repositions

- http://www.edlproject.eu/
- http://books.google.com/googlebooks/library.html
- http://www.wikipedia.org/
- http://www.nasa.gov/
- http://wikieducator.org/Learing4Content
- http://www.eduworks.com/index.php/Publications/Learning-Object-Tutorial.html
- http://oscar.iitc.ac.in/aboutOscar.do
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Proficiency in English

(D.El.Ed First year)

Question Paper -6

Maximum Marks : 50

External : 25

Internal : 25

Rationale and Aim -

The purpose of this course is to enable the student-teachers to improve their proficiency in English. A teacher's confidence in the classroom is often Undermined by a poor command of the English language. Research has shown that improving teachers efficiancy, or one's own belief in one's effectiveness, has a tremendous impact on the classroom teaching who perceives oneself as a proficient in English and more likely to use communicative strategies for teaching English. The Teacher is less likely to resort to using simple translation or guide-books for teaching English.

This course focuses on the receptive (listening and reading) and productive (speaking and writing) skills of English and combines within each of these, both an approach on proficiency in usage in classroom teaching.

SPECIFIC OBJECTIVES

- To strengthen the student-teacher's own English language proficiency.
- To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
- To enable students to link this with pedagogy.
- to re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

This Course will attempt to use a variety of resources, talks and activities to enable the student-teacher to develop/increase their proficiency in English. The Focus will not be on learning and memorizing aspects of grammar and pure linguistics only. Instead, the aim will be to enjoy learning English and to constantly reflect on this learning and also link it with pedagogical strategies.

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Marks
1.	Status of English in India	2
2.	Listening & Speaking	4
3.	Reading	6
4.	Writing	8
5.	Vocabulary & Grammar	5
	Internal Marks	**25**
	Total Marks	**50**

Unit 1- Status of English in India

- English as a global language
- English as a Language of Science & Technology.
- English as a library language.

Unit 2- Listening & Speaking.

- Phonetics and phonology- How sounds are produced, transmitted and received; stress, rhythm and intonation in pronuciation.

Unit 3- Reading.

- Importance of reading
- Reading strategies – word attack, inference, extrapolation

Unit 4- Writing.

- Mechanics of writing-strokes and curves, capital and small letters, cursive and print script, punctuation.
- Different forms of writing- formal and informal letters, messages, notices, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (bio data/CV) writing.
- Controlled and guided writing with verbal and visual inputs
- Free and creative writing.

Unit 5- Vocabulary & Grammar in context

- Synonyms, antonyms, homophones.
- Word formation- prefix, suffix, compounding
- Parts of speech
- Tense, modals
- Articles, determiners
- Types of sentences (assertive, interrogative, imperative, exclamatory)

Mode of Transaction

The teaching would be done on the basis of

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar

(d) Actual classroom teaching.

Assignment

Put the internal assessment activities at one place and let the learners do any 5

Suggested Activities for Active learning-

- Group discussions,
- Speech, debate

- Paragraph writing.
- Writing in a digital format (Text or document file)
- Short digital presentation
- Searching internet for specific information
- Using Phonemic drills.
- Organizing listening and speaking activities
- Rhymes, songs, stories, poems, role-play and dramatization
- Search for websites that support listening and speaking
- Download relevant audio clips
- Interpreting tables, graphs, diagrams, pictures
- Reading different types of texts (descriptions, conversations, narratives, biographical sketches, plays, essays, poems, screen play, letters, reports)
- Searching for texts for reading for Primary level of learners.
- Searching for websites and apps that promote language games.
- Writing individually and refining through collaboration.
- Writing dialogues, speeches, poems, short stories, short essays.
- Describing events, processes.
- Downloading and printing cursive writing exercises.
- Searching for exercises to download for guided writing.
- Presenting their own writings in a digital format.
- Use of dictionary
- Use of reference books, journals
- Devising own vocabulary games for learners at different levels
- Searching websites which promote grammar activities
- Searching websites which promote vocabulary activities
- Preparing digital presentation of a language game

References

- Proficiency in English- Dr. Sharma, Dayal and Smt. Panday, Agrawal Publication, Agra.
- Agnihori, R.K. and Khanna, A.L.(1996). Grammar in context. New Delhi: Ratnasagar. Cook, G, Guy(1989).Discourse, Oxford University Press, Great Clarendon Street, Oxford OX26DP
- Craven, M. (2008). Real listening and speaking-4. Cambridge: Cambridge University Press.
- Driscoll, L. (2008). Real Speaking. Cambridge: Cambridge University Press.
- Grellet, F. (1981). Developing reading skills UK: Cambridge: Cambridge University Press.
- Haines, S. (2008).Real Writing. Cambridge: Cambridge University Press.
- Hedge, T. 1988). Writing. Oxford: Oxford University Press.
- IGNOU (1999).Reading Comprehension (material for Couse ES-344 Teaching of English). New Delhi: New Delhi: IGNOU.
- Lelly, C. Gargagliano, A. (2001). Writing from Within. Cambridge: Cambridge University Press.
- Maley, A. & Duff, A. (1991). Drama techniques in language learning: A resource book of communication activities for language teachers (2nd ed.). Cambridge: Cambridge University Press.
- Morgan, J. and Rinvolucri, M. (1983). Once upon a time: Using stories in the language classroom, Cambridge: Cambridge University Press.
- Radford, A. (2014). English syntax Cambridge University Press.
- Seely, J. (1980). The Oxford guide to writing and speaking. Oxford: Oxford University Press.
- Slatterly, M. and Willis, J. (2001). English for primary teachers: A handbook of activites & Classroom language. Oxford: Oxford University Press.
- Thornbury, Scout(2005)Beyond the Sentence- Introducting Discourse analysis.
- wright, A.(1989). Pictures for language learning, Cambridge: Cambridge University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ in OER & Vedio)

डी.एल.एड. (प्रथम वर्ष)

योग शिक्षा

Yoga Education

(प्रश्नपत्र–7)

पूर्णांक– 50

बाह्य अंक – 25

आंतरिक अंक– 25

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

आज मानव के ज्ञान में अपार वृद्धि के साथ–साथ तीव्र गति से अनेकानेक सामाजिक परिवर्तन हो रहे है। आधुनिक विज्ञान तथा प्राद्यौगिकी ने जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति के सूक्ष्म रहस्य को जानने में सफलता प्राप्त कर ली है। आज व्यक्ति के पास अनेकानेक सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध है, लेकिन दुःख की बात यह है कि धीरे–धीरे स्वास्थ्य खोता जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ा मानसिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य होता है। यह सब उत्तम हो इसके लिए शरीर का संचालन जरूरी है। योग से तन के साथ मन भी स्वस्थ होता है।

डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में शामिल करने का औचित्य यह है कि शालेय स्तर पर आसन और प्राणायाम को करवाया जाये । जिससे बच्चों में एकाग्रता, ध्यान केन्द्रण के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य बन सके।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objective)

1. छात्र–शिक्षकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।
2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।
3. युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरुकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।
4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।
5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।
6. आदर्श सामाजिक कौशल एवं ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।

7. योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना।
8. मानव जीवन के लिए योग की अवधारणा एवं व्यवहार व उसके आशय को समझना।
9. योग की अवधारणा को समझना व योग के विभिन्न सिद्धान्तों को व्यवहार में प्रदर्शित करना।
10. पतञ्जलि, अरबिन्दो व भागवद्गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तरदृष्टि विकसित करना।
11. योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना।
12. योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अन्तरदृष्टि प्राप्त करना।

इकाईवार अंको का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	योग का परिचय (Introduction to Yoga)	5 अंक
2	2	पतञ्जलि के समय और पंतजलि के पश्चात योग का विकास (Patanjali Yoga and post patanjali developments)	5 अंक
3	3	योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियां (Other Important system of Yoga and meditation)	7 अंक
4	4	शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव (Effect of yoga on Physilogy and mental health)	8 अंक
		आंतरिक अंक	25
		कुल अंक	50

इकाई–1 योग का परिचय (Introduction to Yoga)

- योग का अर्थ एवं परिभाषा, योग का क्षेत्र, योग के उद्देश्य, योग के प्रकार (भक्ति योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, कुण्डलिनी योग), योग व व्यायाम में अन्तर, योग के पूरक व्यायाम– सूक्ष्म यौगिक क्रियायें, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए योग का महत्व।
- योग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– पतञ्जलि से पूर्व में योग की स्थिति (सिन्धु घाटी की सभ्यता, वैदिककाल, उपनिषदकाल, रामायणकाल महाभारतकाल) सांख्य और योग, जैन धर्म एवं योग बौद्ध धर्म एवं योग।

इकाई–2 पतञ्जलि के समय और पतंजलि के पश्चात योग का विकास

(Patanjali Yoga and post patanjali developments)

- महर्षि पतञ्जलि द्वारा योग का सुव्यवस्थीकरण, अष्टांग योग का परिचय–नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, महर्षि पतञ्जलि का योग के क्षेत्र में योगदान।
- पतञ्जलि के पश्चात योग का विकास– योग के विभिन्न ग्रथों का सामान्य परिचय–योगसूत्र, घेरण्डसंहिता, हठयोग प्रदीपिका, आधुनिक युग में योग का पुर्नजागरण।
- योग के क्षेत्र में विभिन्न योग संस्थाओं का योगदान जैसे– कैवल्यधाम लोनावाला, बिहार योग विद्यालय मुंगेर, स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर, दिव्य जीवन संघ शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश, मोरार जी देशाई राष्ट्रीय योग अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली, पतञ्जलि योगपीठ हरिद्वार।

इकाई–3 योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियाँ

(Calucation and other Important system of Yoga and meditation)

- ध्यान का अर्थ, प्रकार एवं लाभ, ध्यान में उपयोगी एवं बाधक तत्व।
- पंचकोष की अवधारणा, भगवद्गीता और योग, ध्यानयोग– (गीता, अध्याय 6 में वर्णित श्लोक संख्या 10 से श्लोक संख्या 36 तक की व्याख्या) जप ध्यान, अजपाध्यान, पतञ्जलि के आधार पर ध्यान पद्धति।
- प्रेक्षा ध्यान अर्थ और उद्देश्य, विपश्यना ध्यान का अर्थ और उद्देश्य।

इकाई–4 शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव

(Effect of yoga on Physilogy and mental health)

- शारीरिक तन्त्रों पर योग का प्रभाव–परिसंचरण तन्त्र, कंकाल तन्त्र, पाचन तन्त्र, श्वसन तन्त्र, तन्त्रिकातन्त्र, उत्सर्जन तन्त्र।
- अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का परिचय एवं उन पर योग का प्रभाव।
- मानसिक स्वास्थ्य, चिन्ता, अवसाद, तनाव कम करने में योग की भूमिका।

सत्रगत कार्य –

योग अभ्यास और गतिविधियाँ (Practium and Suggested Activities) कोई 3 किये जायेगें

1. योग केन्द्र का भ्रमण करना और केन्द्र में आयोजित गतिविधियों पर आधारित प्रतिवेदन लिखना।

2. किसी एक योग अभ्यासकर्ता का साक्षात्कार लेना और उसके द्वारा अनुभव किए गए लाभों पर एक प्रतिवेदन लिखना।

3. योगासनों से सम्बन्धित जानकारी आधिकारिक स्त्रोतों से एकत्रित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।

4. अपने सहयोगी समूह के समक्ष किसी पांच आसनों को प्रदर्शित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।

आसन

क) ध्यानात्मक आसन – सुखासन, अर्ध पद्मासन, पद्मासन, सिद्धासन, सिद्धयोन्निआसन, बज्रासन।

ख) विश्रामात्मक आसन – योगनिद्रा, शवासन, मकरासन।

ग) खड़े होकर किये जाने वाले आसन – ताड़ासान, पादहस्तासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, गरुणासन, उत्तानासन, अर्धकटिचक्रासन, उत्कटासन, पादांगुष्ठासन, वीरभद्रासन।

घ) बैठकर किये जाने वाले आसन– बद्धकोणासन, वक्रासन, पश्चिमोत्तासन, शशांकासन, गोमुखासन–1 एवं 2. वीरासन, मारिच्यासन, जानुशीर्षासन, उष्ट्रासन, योगमुद्रा, सुप्त बज्रासन।

प्राणायाम

नाड़ी शोधन प्राणायाम, कपालभाति, भ्रामरी प्राणायाम, शीतली प्राणायाम, भस्त्रिका प्राणायाम, शीतकारी प्राणायाम तथा उज्जायी प्राणायाम।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

1. अवलोकन एवं अनुकरण द्वारा
2. विभिन्न योग केन्द्रो का भ्रमण
3. योग पर आधारित साहित्य का समूह में वाचन एवं संवाद

सुझावात्मक संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पातञ्जलि योग प्रदीप – स्वामी ओमकारानन्दनन्द – गीता प्रेस गोरखपुर
2. योगांक – गीता प्रेस गोरखपुर
3. योग और हमारा स्वास्थ्य– आर.के. स्वर्णकार आरती प्रकाशन इलाहबाद
4. योगदर्शनम् – आचार्य उदयजी शास्त्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।
5. पातञ्जलि योग सार – डॉ. साधना, दौनेरिया, मधूलिका प्रकाशन इलाहबाद
6. योग और यौगिक चिकित्सा – प्रो. राम हर्ष सिंह चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।
7. (http://www.tess-India.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

हिन्दी भाषा शिक्षण

Hindi Language Teaching

(प्रश्न पत्र– 8)

पूर्णांक अंक –100

बाह्य मूल्यांकन–70

आंतरिक मूल्यांकन–30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim):–

भाषा संप्रेषण का माध्यम है, ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। यदि कही कोई विचार देना होता है। तो उसके लिये भाषा की आवश्यकता होती है और यदि वह अपनी भाषा दें तो खुलकर अभिव्यक्ति हो पाती है। देश की आबादी का बहुत बड़ा भाग हिन्दी भाषा का उपयोग करता है। हिन्दी भाषा शिक्षण का उद्देश्य परिवार, समाज और राष्ट्र में अच्छी भाषा का संचालन होता है। हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशलों का विकासकरना व्याकरण संबंधी जानकारियाँ देना। इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य है। भाषा के मूल तत्वों को प्रकृति को जानकर छात्राध्यापक अपनी पाठयोजना तैयार कर सकें, शुद्ध बोलना, शुद्ध वाचन बच्चों को सिखा सकें, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हिन्दी भाषा शिक्षण को डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं संरचना से छात्राध्यापकों को परिचित कराना।
- स्कूली पाठ्यक्रम के वृहद परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा के महत्व, उसके अधिग्रहण तथा अधिगम को समझना।
- हिन्दी भाषा के विभिन्न कौशलों एवं उनके शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम के तरीकों को समझना।
- हिन्दी भाषा की विषयवस्तु में व्याकरण के रचनात्मक प्रयोग करना।

इकाईवार अंको का विभाजन

सरल क्र.	इकाई	इकाई का नाम	अंक
1	1	हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया	13
2	2	हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल	12
3	3	भाषा शिक्षण के कौशल	12
4	4	गद्य और पद्य शिक्षण	13
5	5	व्यावहारिक व्याकरण	10
6	6	मूल्यांकन	10
आंतरिक अंक			30
कुल योग			100

इकाई 1 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया

- हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
- माध्यम भाषा/ प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप
- हिन्दी भाषा का अधिग्रहण और उस संदर्भ में कक्षा की प्रतिक्रिया
- शिक्षण की भूमिका

इकाई 2 हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल

- सुनना और इस कौशल से क्या आशय है।
- हिन्दी भाषा की कक्षा में सुनना कौशल का विकास संबधी गतिविधियाँ
- बोलने के कौशल का आशय
- हिन्दी भाषा कक्षा में बोलना कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ (गीत, कविता, संवाद, संभाषण, विडियो, सिनेमा)

इकाई 3 भाषा शिक्षण के कौशल

- पढ़ना कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा कक्षा में पढ़ने के कौशल से संबधित गतिविधियाँ –विषयवस्तु का वाचन, वाचन पश्चात् अपने अनुभव से जोड़ना–1 विभिन्न प्रकार की पठनीय सामग्री का वाचन कर उसका आनंद उठाना।
- हिन्दी भाषा की कक्षा में पढ़ने के कौशल विकास के लिए रणनीति – पढ़ने के पूर्व और पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ।
- लेखन के कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा की कक्षा में लेखन कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ।

इकाई 4 गद्य और पद्य शिक्षण

- गद्य और पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- हिन्दी भाषा को कक्षा, लेख, व्यंग, निबंध आदि शिक्षण की पाठ योजना बनाना और कक्षा की प्रतिक्रिया।

इकाई 5 व्यावहारिक व्याकरण

- कक्षा के स्तरानुरूप व्याकरण तत्व का रचनात्मक पद्धति से शिक्षण
- व्याकरण के खेल/गतिविधि

इकाई 6 मूल्यांकन

- हिन्दी भाषा कक्षा का रचनात्मक मूल्यांकन
- हिन्दी भाषा की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- आकलन/मूल्यांकन का रख–रखाव, टीप लिखना, फीडबैक

सत्रगत कार्य (Assignments) कोई तीन प्रायोजना कार्य कीजिए–

1. सुनना कौशल पर आधारित ऑडियो तैयार करना जिसमें विभिन्न प्रकार की आवाजों को पहचानना, किसी के व्याख्यान को समझना, उस पर आधारित प्रश्नो के उत्तर लेना।
2. पढ़ना एवं लिखना कौशल पर आधारित पाठयोजना तैयार करना।
3. किसी एक कथा की भाषा की पाठ्यपुस्तक की समीक्षा करना।
4. स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।
5. किसी स्थानीय स्थल के भ्रमण पर प्रतिवेदन तैयार करना।
6. बच्चों को व्याकरण सिखाने के ICT का प्रयोग करते हुए तीन हिन्दी भाषाई खेल तैयार करें

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

1. छात्राध्यापकों को पठन हेतु सामग्री प्रदान कर उस पर चर्चा करना, चिन्तन करना।
2. छोटे–छोटे समूह में वाचन करवाना उस पर चर्चा करवाना।
3. विभिन्न प्रकार के ऑडियो सुनवाकर सुनना कौशल पर जोर देना।
4. विषयवस्तु पर प्रश्न पूछ कर विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
5. तत्कालिन प्रचलित संदर्भों पर आलेख लिखवाना और उस पर चर्चा करना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ की सूची

1. NCF-2005
2. भारतीय भाषाओं का शिक्षण–आधार पत्र NCERT–2005
3. हिन्दी भाषा शिक्षण– डॉ. प्रकाश चंद्र भट्ट
4. भाषा विज्ञान–डॉ. भोलानाथ तिवारी
5. भाषा की प्रकृति इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली
6. बच्चे की भाषा और अध्यापक – N.B.T. कृष्ण कुमार
7. भाषा शिक्षण– SCERT छत्तीसगढ़
8. भाषा और पहचान– डेविड क्रिस्टल
9. पढ़ने की समझ– NCERT, नई दिल्ली
10. लिखने की शुरुआत– NCERT, नई दिल्ली
11. पढ़ना सिखाने की शुरुआत– NCERT, नई दिल्ली
12. हिन्दी व्याकरण सार– डॉ. ब्रजरतन जोशी, पत्रिका प्रकाशन नई दिल्ली
13. राजभाषा हिन्दी – मनोज कुमार
14. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना– डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद
15. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – श्रीमति शर्मा एवं प्रो. दुबे, राधा पब्लिकेशन, आगरा।
16. भाषा बोध एवं प्रारंभिक भाषा विकास – भाई योगेन्द्र जीत, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
17. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

संस्कृत भाषा शिक्षण

Sanskrit Education

(प्रश्नपत्र–8) (वैकल्पिक)

पूर्णांक –100

बाह्य अंक – 70

आंतरिक अंक – 30

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim) :–

संस्कृत यूरोपीय भाषा परिवार की भाषा है। संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। अनेक भारतीय भाषाओं के विकास में संस्कृत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत की भूमि पर विकसित होने, क्षेत्र विशेष से संबद्ध नहीं होने और संस्कृत साहित्य की प्रचुर उपलब्धता के आधार पर इस भाषा के महत्व को अलग से रेखांकित किया जाता है। संस्कृत भाषा का विशाल साहित्य पाठकों के लिये अमूल्य निधि है। संस्कृत की मुख्यधारा में एक ओर वैदिक वाङ्मय है तो दूसरी ओर भास, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, बाणभट्ट, भर्तृहरि जैसे रचनाकारों की कृतियाँ हैं। इसके साथ ही संस्कृत साहित्य की लोकधारा भी है, जिसमें सामान्य जन–जीवन की कठिनाइयों को भी स्वर मिला है।

छात्राध्यापक भाषा का उचित एवं सही प्रयोग कर सकें इसके लिए भाषायी दक्षताएँ तथा कौशल विकसित करने का दायित्व भाषा शिक्षक का ही होता है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षक संस्कृत भाषा सीखने एवं प्रयोग व्यवहार में लाने योग्य कक्षा में अनुकूल परिस्थितियों एवं अवसरों का निर्माण करें।

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार प्रदेश के विद्यालयों में कक्षा 6 से 10 तक मातृभाषा के साथ संस्कृत को भी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- छात्राध्यापकों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं समझ जागृत करना।
- संस्कृत भाषा के भाषायी कौशलों का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को संस्कृत भाषा की शब्दावली, व्याकरण, शुद्ध उच्चारण एवं लेखन से परिचित कराना (रचनात्मक तरीकों से)

- संस्कृत साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना एवं लेखन एवं संवाद कौशल को बढ़ावा देना।
- छात्राध्यापकों के संस्कृत व्याकरण ज्ञान एवं उनके व्याकरण के प्रयोग कौशल में वृद्धि करना।
- छात्राध्यापकों को संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं, यथा– काव्य, कथा, गद्य आदि का शिक्षण कर सकने योग्य बनाना।
- संस्कृत भाषा की संरचना को रटे बिना समझना (समझ विकसित करना)
- संस्कृत माध्यम में शिक्षण की चुनौतियों को समझना।
- संस्कृत के प्राचीन एवं आधुनिक साहित्यकारों लोक साहित्यकारों की कृतियों से परिचित कराना।

इकाईवार अंकों का विभाजन –

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं कक्षा प्रक्रियाएँ	12 अंक
2	2	भाषा शिक्षण के कौशल – सुनना	13 अंक
3	3	भाषा शिक्षण के कौशल – पढ़ना	12 अंक
4	4	गद्य एवं पद्य शिक्षण	13 अंक
5	5	व्यावहारिक व्याकरण	10 अंक
6	6	मूल्यांकन	10 अंक
		आंतरिक अंक	30
		कुल अंक	100

इकाई 1– संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं कक्षा प्रक्रियाएँ

- संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य
- द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत की कक्षा का स्वरूप
- भाषा का अधिग्रहण और इसके संदर्भ में कक्षा की प्रक्रियाएँ
- द्वितीय भाषा के शिक्षण के रूप में संस्कृत शिक्षक की भूमिका

इकाई 2– भाषा शिक्षण के कौशल–सुनना

- सुनने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में श्रवण कौशल के विकास की गतिविधियाँ
- बोलने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में बोलने के कौशल के विकास की गतिविधियाँ
  (संस्कृत गीत, कहानी, संवाद, संभाषण आदि के द्वारा)

इकाई 3– भाषा शिक्षण के कौशल–पढ़ना

- पढ़ना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में पठन गतिविधियाँ– पाठ्यपुस्तक को संस्कृत माध्यम से पढ़ना, पढ़कर उसे अनुभवों से जोड़ना, विविध तरह की पाठ्यसामग्री को पढ़कर उसका आनंद ले पाना।
- संस्कृत की कक्षा में पढ़ने की रणनीतियाँ– किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने से पूर्व पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद अपनाई जाने वाली रणनीतियाँ
- लिखना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में बच्चों को मौलिक लेखन के कौशल के विकास हेतु की जाने वाली गतिविधियाँ

इकाई 4– गद्य एवं पद्य शिक्षण

- गद्य एवं पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- संस्कृत की कहानी, आलेख, निबंध आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ
- संस्कृत की कविता, गीत, श्लोक आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ

इकाई 5– व्यावहारिक व्याकरण

- कक्षानुसार व्याकरण के तत्वों को रचनात्मक तरीके से पढ़ाने के तरीके
- व्याकरण के खेल/गतिविधियाँ

इकाई 6– मूल्यांकन

- संस्कृत की कक्षा में रचनात्मक (मौलिक/लिखित) मूल्यांकन
- संस्कृत की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- मूल्यांकन/आकलन के दस्तावेजों का संधारण, टिप्पणी लेखन, फीडबैक

सुझाव

- संस्कृत की शिक्षण प्रक्रियाओं में पाठ्यपुस्तक से इतर गीत, कविताएँ, कहानियाँ आदि का समावेश किया जाए।

सत्रगत कार्य / Assignments कोई तीन करना है।

1. बहुभाषिक कक्षा को संसाधन के रूप में उपयोग में लाते हुए पाठ योजना तैयार करना
2. संस्कृत सुनने एवं बोलने के कौशल के विकास हेतु कक्षा की गतिविधियाँ तैयार करना व उनका प्रदर्शन करना जैसे– कहानी, कविता सुनाकर उन पर बात करना।
3. अलग–अलग विधाओं के पाठ को पढ़कर उन पर अपनी राय रखना, सारांश लिखना, प्रश्न बनाना जैसी गतिविधियाँ करना
4. विभिन्न पाठ्यपुस्तकों (निजी प्रकाशन / राज्य की) के पाठों का विश्लेषण करना व रिपोर्ट तैयार करना
5. प्रादेशिक गीत, लोककथाओं, कहावतों का संकलन करना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची–

- ग्रंथ संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका – लेखक डॉ. बाबूराम सक्सेना, इलाहबाद
- संस्कृत भाषा शिक्षण – रामशकल पाण्डेय, इलाहबाद
- वृहद अनुवाद चंद्रिका – चक्रधर नौटियाल 'हंस', मोतीलाल बनारसीदास
- रचना अनुवाद कौमुदी – डॉ. कपिल देव द्विवेदी
- संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- संस्कृत हिन्दी कोश – वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. प्रथम

मराठी भाषा शिक्षण

Marathi Language Teaching

(प्रश्नपत्र–8) (वैकल्पिक)

पूर्णांक – 100

बाह्य मूल्यांकन – 70

आंतरिक मूल्यांकन – 30

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim) :–

छात्राध्यापक भाषा का उचित एवं सही प्रयोग कर सकें इसके लिए भाषायी दक्षताएँ तथा कौशल विकसित करने का दायित्व भाषा शिक्षक का ही होता है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षक मराठी भाषा सीखने एवं प्रयोग व्यवहार में लाने योग्य कक्षा में अनुकूल परिस्थितियों एवं अवसरों का निर्माण करें।

4. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) :–

- छात्राध्यापकों में मराठी भाषा के प्रति रुचि एवं समझ जागृत करना।
- मराठी भाषा के भाषायी कौशलों का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को मराठी भाषा की शब्दावली, व्याकरण, शुद्ध उच्चारण एवं लेखन से परिचित कराना (रचनात्मक तरीकों से)
- मराठी साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना तथा लेखन एवं संवाद कौशल को बढ़ावा देना।
- छात्राध्यापकों के मराठी व्याकरण ज्ञान एवं उनके व्याकरण के प्रयोग कौशल में वृद्धि करना।
- छात्राध्यापकों को मराठी की विभिन्न विधाओं, यथा– काव्य, कथा, गद्य आदि का शिक्षण कर सकने योग्य बनाना।

ईकाईवार अंकों का विभाजन –

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	मराठी भाषा शिक्षणाचे उद्देश्य आणि कक्षा (वर्ग) प्रतिक्रिया	13
2	2	मराठी भाषा शिक्षणाचे कौशल्य	12
3	3	भाषा शिक्षणाचे कौशल्य	12
4	4	गद्य आणि पद्य शिक्षण	13
5	5	व्यावहारिक व्याकरण	10
6	6	मूल्यांकन	10
		आंतरिक अंक –	30
		कुल अंक –	100

घटक (इकाई 1) – मराठी भाषा शिक्षणाचे उद्देश्य आणि कक्षा (वर्ग) प्रतिक्रिया

- मराठी भाषा शिक्षणाचे उद्देश्य
- माध्यम भाषा / द्वितीयच्यारूपात मराठीच्या वर्गाचे स्वरूप
- मराठी भाषेचे अधिग्रहण आणि त्या संदर्भात वर्गातील प्रतिक्रिया
- शिक्षकाची भूमिका

घटक (इकाई 2) – मराठी भाषा शिक्षणाचे कौशल्य

- ऐकणे या कौशल्याचा काय आशय आहे ?
- मराठीच्या वर्गातील ऐकण्याच्या कौशल्या विकासाच्या गतिविधि
- बोलण्याच्या कौशल्याचा काय आशय आहे ?
- मराठीच्या वर्गातील बोलण्याच्या कौशल्याच्या विकासाच्या गतिविधि
  (मराठीतील गीत, कविता, संवाद, संभाषण, वीडियो, सिनेमा)

घटक (इकाई 3)– भाषा शिक्षणाचे कौशल्य

- वाचनाच्या कौशल्याचे तात्पर्य
- मराठीच्या वर्गात वाचन गतिविधि– पाठ्यवस्तुचे वाचन, वाचन करून ते स्वतःच्या अनुभवांशी जोड़ता येणे, विविध प्रकारा ची पाठ्य साम्रगी वाचुन त्याचा आनंद घेउ शकणे.
- मराठीच्या वर्गात वाचनासाठी रणनीति– वाचना पूर्व वाचना करताना आणि वाचना नंतरच्या गतिविधि
- जिहेव्या कौशज्याचे तात्पर्य
- मराठीच्या वर्गात लेखन कौशल्याच्या विकासासाठी करण्याच्या गतिविधि

घटक (इकाई–4)– गद्य आणि पद्य शिक्षण

- गद्य व पद्य शिक्षणाचे उद्देश्य
- मराठी तील कथा, लेख, व्यंग, निबंध वगैरेच्या शिक्षणाची पाठयोजना आणि वर्गातील प्रतिक्रिया
- मराठी कविता, गीत वगैरेच्या अध्यापणाची पाठयोजना आणि वर्गातील प्रतिक्रिया

घटक (इकाई–5) व्यावहारिक व्याकरण

- वर्गा तील स्तरा अनुरूप व्याकरणच्या तत्वांचे रचनात्मक पद्धतीने शिकविण्याची पद्धत
- व्याकरणाचे खेळ/गतिविधि

घटक (इकाई–6) मूल्यांकन

- मराठीच्या वर्गात रचनात्मक मूल्यांकन
- मराठीच्या वर्गात योगात्मक मूल्यांकन
- आकलन/मूल्यांकन च्या कागदपत्रां चा (दस्तावेज) रखरखाव (संधारण), टीप लेखन, फीडबैक

सत्रगत कार्य (Assignments) कोई तीन प्रायोजना कार्य कीजिए–

1. सुनना कौशल पर आधारित आलेख तैयार करना जिसमें विभिन्न प्रकार की आवाजों को पहचानना, किसी के व्याख्यान को समझना, उस पर आधारित प्रश्नो के उत्तर लेना।
2. पढ़ना एवं लिखना कौशल पर आधारित पाठयोजना तैयार करना।
3. भाषा की पाठ्यपुस्तक से किसी एक कथा की समीक्षा करना।
4. स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन करना।

5. किसी स्थानीय स्थल के भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना।
6. बच्चों को व्याकरण सिखाने के ICT का प्रयोग करते हुए तीन हिन्दी भाषाई खेल तैयार करें

अंतरण की विधियाँ (Mode of Tranjection)

1. छात्राँध्यापकों को पठन हेतु सामग्री प्रदान कर उस पर चर्चा करना, चिन्तन करना।
2. छोटे–छोटे समूह में वाचन करवाना उस पर चर्चा करवाना।
3. विभिन्न प्रकार के ऑडियो सुनवाकर सुनना कौशल पर जोर देना।
4. विषयवस्तु पर प्रश्न पूछ कर विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना।
5. तत्कालिन प्रचलित संदर्भो पर आलेख लिखवाना और उस पर चर्चा करना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. मराठी व्याकरण – मोरेश्वर सखाराम मोरे
2. सुलभ व्याकरण – श्री शनिवारे
3. बोबड़े गीते –
4. इसप नीती मराठी भाषांतर

Diploma in Elementary Education

Ist Year

Pedagogy of Urdu Language (Mother Toungue)

جملہ نمبرات	100
خارجی نمبرات	70
داخلی نمبرات	30
جملہ گھنٹے	140

تعارف (Introduction) :—

اعلیٰ ثانوی سطح کی تعلیم مکمل کرنے والے طلبا سے زبان کی خاص مہارتیں سننا، بولنا، پڑھنا، لکھنا کے علم اور عملی زندگی میں ان کا استعمال کی توقع کی جاتی ہے۔ طلبا میں مطلوبہ لسانی صلاحیتوں کے فروغ کی ذمہ داری خاص طور سے اساتذہ کی ہوتی ہے۔ اس نقطۂ نظر سے تدریس کے طریقوں کو بہتر بنانے اور طلبا کو زبان و بیان کے تمام پہلوؤں کو سمجھانے کی کوشش میں معلمین کو مختلف کردار، جیسے دوست، معاون، محرک اور مواقع فراہم کرانے والا وغیرہ وغیرہ ادا کرنا ہوتا ہے جس سے طلبا کی فکری، تعمیری، تخلیقی، تخیلی اور تفہیمی صلاحیتوں میں خاطر خواہ اضافہ ہو اور وہ پُر لطف آموزش سے ہمکنار ہو سکیں۔ اردو زبان کے اس نصاب کے ذریعے معلم طالب علم کے کردار میں درج ذیل تبدیلیوں کی توقع کی جاتی ہے۔

مقاصد خصوصی (Specific objectives) :—

- ☆ اردو زبان کی بنیادی مہارتوں میں عبور حاصل کرنا۔
- ☆ تدریس کے مختلف طریقے سکھانا اور ضرورت کے مطابق ان کا اطلاق کرنا۔
- ☆ تنقیدی مطالعہ کی صلاحیت کو فروغ دینا۔
- ☆ اردو زبان کے لئے جذبہ استحسان پیدا کرنا۔
- ☆ زبان و ادب سے متعلق بنیادی معلومات میں اضافہ کرنا۔
- ☆ قواعد کی تکنیک سے واقفیت اور ان کا صحیح استعمال کرنا سکھانا۔
- ☆ اردو زبان و ادب کی تدریس کے خاص اور عام مقاصد میں فرق سکھانا۔
- ☆ درسی کتب کے علاوہ اکتساب کے مختلف امدادی وسائل کا استعمال کرنا/سکھانا۔
- ☆ منصوبہ سبق کی تدریس کی ضرورت اہمیت اور استعمال کی عادت پیدا کرنا۔
- ☆ اردو کے جدید رجحانات میں رغبت پیدا کرنا۔
- ☆ مسلسل اور جامع جانچ کے لئے مختلف ریکارڈ تیار کرنا۔

اکائی وار نمبرات اور گھنٹے

نمبر شمار	اکائی کا نام	نمبرات	گھنٹے
1	اردو زبان! آغاز وارتقا تدریسی مقاصد اور سرگرمیاں	14	23
2	اردو زبان کی تدریسی مہارتیں	14	24
3	اردو نثر و نظم کی تدریس	12	24
4	عملی قواعد کی تدریس	10	23
5	اردو تدریس کے جدید رجحانات	10	23
6	تعین قدر اور آزمائش	10	23
کل		**70**	**140**

☆☆☆

اردو نصاب تعلیم برائے ڈی.ایل.ایڈ

فرسٹ ایر (مادری زبان)

Time : M.M. : 70

اکائی نمبر 1 : اردو زبان! آغاز وارتقا تدریسی مقاصد اور سرگرمیاں۔ **گھنٹے 23 نمبرات 14**

- ☆ اردو زبان کا مختصر تعارف۔
- ☆ اردو زبان کی تدریس کے مقاصد (عام/خاص مقاصد)
- ☆ اردو تدریس برائے مادری زبان (ابتدائی سطح)
- ☆ اردو تدریس برائے ثانوی زبان (ابتدائی سطح)
- ☆ مادری زبان کی تدریس برائے اعلیٰ ابتائی سطح۔
- ☆ مادری زبان کی تدریس میں معلم کا کردار۔
- ☆ اردو زبان کی تدریسی سرگرمیاں۔

اکائی نمبر 2 : اردو زبان کی تدریسی مہارتیں۔ **گھنٹے 24 نمبرات 14**

- ☆ سننا
- ☆ بولنا
- ☆ پڑھنا
- ☆ لکھنا

اکائی نمبر 3 : اردو نثر و نظم کی تدریس۔ **گھنٹے 24 نمبرات 12**

- ☆ نثری اصناف کی تدریس کے مقاصد
- ☆ نثری اصناف کی تدریس کے طریقہ کار
- ☆ شعری اصناف کی تدریس کے مقاصد
- ☆ شعری اصناف کی تدریس کے طریقہ کار
- ☆ منصوبہ سبق

اکائی نمبر4 : عملی قواعد کی تدریس (اسباق میں شامل اردو قواعد کی تفہیم)۔ **گھنٹے 23 نمبرات 10**

☆ عملی قواعد کی تدریس کے طریقہ کار۔

☆ مفرد الفاظ، مرکب الفاظ، جملہ، فقرہ۔

☆ اسم، فعل، ضمیر، صفت، تذکیر و تانیث، واحد جمع، تضاد، سابقے، لاحقے۔

☆ تشبیہہ، استعارہ، تلمیح، مبالغہ، محاورے، کہاوتیں، رموز اوقاف، پہیلی، کہہ مکرنیاں۔

☆ لسانی کھیل (بیت بازی، نظم خوانی، تعلیمی تاش، کوئز، تقریری مقابلے، کہانی سنانا)۔

☆ ہیئت، شعر، مصرع۔

اکائی نمبر5 : اردو تدریس کے جدید رجحانات۔ **گھنٹے 23 نمبرات 10**

(New Techniques and Trends of Urdu Teaching)

☆ شمولیاتی تعلیم (Inclusive Education)

☆ تعمیریت (Constructivist Approch)

☆ پُر لطف آموزش (Joyful Learining)

☆ تخلیقی اور تفہیمی طریقہ کار (Creative and Counprehensive Attitude)

☆ کر کے سیکھنا (Learning by doing)

☆ تدریسی عمل میں آئی سی ٹی کا استعمال۔

☆ تدریسی عمل میں معاون ہم نصابی تعلیم سرگرمیاں (Co-curricular Activities)

☆ تدریس میں ٹی.ایل.ایم. کی اہمیت وافادیت۔

اکائی نمبر6 : تعین قدر اور آزمائش۔ **گھنٹے 23 نمبرات 10**

(Assessment and Evaluation)

☆ پیمائش (Measurement) اندازۂ قدر (Assessment) اور تعین قدر (Evaluation) میں فرق۔

☆ مسلسل اور جامع اندازۂ قدر۔ C.C.E.

☆ تشخیصی اور معالجی تعین قدر۔

☆ امتحانی اصلاحات (Examination reforms)

☆ اچھے سوال نامے کی خصوصیات۔

تفویضات (Assignments) :—

☆ اردو تدریس میں پیش آنے والے مسائل۔

☆ کسی لوک کہانی کا اردو میں ترجمہ اور پیش کش۔

☆ اردو زبان کی مہارتوں کے فروغ کے لئے معاون اشیا کی تشکیل۔

☆ تخلیقی، لسانی اور ثقافتی صلاحیتوں کے فروغ کے لئے درج ذیل میں سے کسی ایک سرگرمی کا خاکہ بنائیں جیسے خطابت، مضمون نگاری، افسانہ نگاری، تلخیص، فی البدیہہ تقریر، بیت بازی، ڈرامہ میں اداکاری وغیرہ۔

☆ اردو زبان کو سیکھنے میں پیش آنے والے کسی ایک مسئلہ پر ایکشن ریسرچ کا خاکہ بنانا۔

☆ اردو درسی کتاب کا تنقیدی تجزیہ۔

مثالی سوال نامے کی تشکیل (CCE) کے تناظر میں مجوزہ مطالعہ جات (Suggested Reading)

☆ انصاری، ایف۔ (2013)۔ تدریس کے عصری تقاضے، گولڈن گرافک اینڈ پرنٹرس دہلی۔

☆ احمد آر۔(2013)۔ اردو تدریس، مکتبہ جامعہ نئی دہلی لمیٹیڈ۔

☆ بچھ، ایم۔(2004)۔ طریقہ تعلیم اردو، آر لال بک ڈپو میرٹھ۔

☆ غضنفر۔ (2008)۔ لسانی کھیل، بشرا پبلی کیشنز نئی دہلی۔

☆ معین الدین (2004)۔ ہم اردو کیسے پڑھائیں، مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ۔

☆ منظر، او۔ (2009)۔ ٹیچنگ آف اردو لینگویج، شیرا پبلی کیشن نئی دہلی۔

☆ ماڈیولس، دوسالہ ڈی۔ایڈ۔اردو۔

☆ ماڈیولس، مختلف اردو ٹریننگ راجیہ شکشا کیندر۔

☆ این۔سی۔ایف۔(2005)۔

☆ نجم السحر اور سعید ایس۔ (2007)۔ تدریس اردو پریمئر، پبلشنگ ہاؤس حیدرآباد۔

☆ ندیم آفاق۔ (2015)۔ تعلیمی نفسیات کے پہلو، ایجوکیشنل بک ہاؤس علی گڑھ۔

☆ سعید، آصف اور کوثر، صالحہ۔ رہبر تدریس۔

☆ پوزیشن پیپر، نیشنل فوکس گروپ۔ (2010)۔ ہندوستانی زبانوں کی تدریس NCERT

☆ آر۔بی۔ای۔ (2009)۔

☆ ایچ۔زبیدہ۔ (2012)۔ تدریس اردو، ادبستان پبلی کیشنز، دہلی۔

☆☆☆

Pedagogy of English Language
First year
(For primary)
(Question Paper - 9)

Maximum Marks : 100

External : 70

Internal : 30

(Rationale and Aim) :–

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is also to expose the student-teacher to contemporary practices in English language Teaching (ELT). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student-teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Specific Objective

- Equip student-teachers with a theortical perspective on English as a "Second Language"(ESL)"
- Enable student-teachers to grasp general principles in language learning and teaching.
- To understand young learners and their learning context.
- To grasp the principles and practice of unit and lesson planning for effective teaching of English.

- To develop classroom management skills; procedures and techniques for teaching language.
- To Examine and develop resources and materials and there usage with young learners for language teaching and testing.
- To examine issue in language assessment and their impact on classroom teaching.

The Course is designed to be very practical in nature and includes equipping the student-teacher with numerous teaching ideas to try out in the classroom. Of course, all practical ideas must be related to current theory and best practice in the teaching of young learners. It is important to make a constant to make a constant theory-practice connection for the student-teachers.

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Marks allotted
1.	Teaching of English at the elementary level	10
2.	Approaches to teaching of English	15
3.	Classroom transaction process	15
4.	Curriculum, text book & Material development	15
5.	Planning & Assesment	15
Internal Marks		30
Total		100

The theory paper will comprise of the five units-

Unit 1- Teaching of English at the Elementary level

- Issues of learning English in a multilingual' multicultural society.

- Issues of teaching Englilsh as second language at (a) Early primary- class I and II, (b) Primary- class III, IV and V.
- Learner socio-Cultural background and need learning English

Unit 2- Understanding of Textbooks and Approaches to the Teaching of English

- The cognitive and constructive approach-nature and role of learner, catering to different types of learners, age, of learning, learning style, teaching large classes, socio-cultural pace factors and socio-psychological factors
- Behaviouristic approach- direct method, grammar- translation method, structural, approval, communicative approach, state specific methods- Activity Based Learning (ABL) and Active learning Methodology (ALM)

  The internal assessment will be done on the following two sub-sections

Unit 3- Classroom transaction process.

- Stating learning outcomes and achieving them
- Pair work, group work
- Use of story telling, role play, drama, songs as pedagogical tools.
- Pre-reading, reading and Post-reading, objectives and procsses.
- Questioning to promote thinking.
- Dealing with textual exercises.

  The internal assessment will be done on the following section-

A. Preparing teaching plan (five) using constructive approch and including at least three of the following activities:

(i) pair work

(ii) group work

(iii) story telling

(iv) role-play

(v) drama

(vi) songs/rhymes

(vii) questioning to promote thinking.

B. **Peer analysis of the lession plan**

C. **Suggested ICT activities**

- Searching and downloading lesson plan based on constructivist approch
- Edit, moderate and contextalize at least one leasson plan.
- Present lesson plan digitally (on LCD projection or on smartphone)

Unit 4- Curriculum, textbook and material development.

- Preparing material for young learners.
- Using local resources.
- Using open resource (OER's) text, video, audio
- Analyzing and receiving teaching- learning materials and OER's.
- Academic standards, learning indicators and learning outcomes.
- Need and process of curriculum revision
- Text analysis of school textbooks for English

Unit 5- Planning & Assessment

- Planning for teaching
- Year plan, unit plan and period plan.
- Teachers' reflection on their own teaching learning practices
- Continuous and comprehensive evaluation (CCE)
- Monitoring of learning and giving feed back

Mode of transaction

The teaching would be done -

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar & actual classroom teaching.

Assignment

- Reading Passages and analyzing the distribution of linguistic elements.
- Making generalization on syntactic and morphological properties.

- Checking the generalizations and editing them individually and also through collaboration, feedback.
- Critical reading of specific areas of grammar as discussed in a few popular grammar books and reaching at conclusions.
- Put the internal assessment activities at one place and let the learners do any 5

Suggested activities for active learning

- Group discussion with Bal cabinet, SC
- Speech, debate on issues of teaching- learning English
- Short essay.
- Short digital presentation on issues of teaching- learning English.
- Search and download open educational resources for Madhya Pradesh preferably in Hindi.
- Find out which websites host open educational video resources relevant to Madhya Pradesh
- Download at least one video resource from state and National repositories.
- Group discussion on Individual differences Including all
- prepare and display charts on different approaches/Methods of teaching English
- Compare and contrast state specific programmers- ABL and ALM
- collect reference material on (a) learning styles and (b) Pace of learning, from different websites
- prepare and present digitally on (a)learning styles and (b) Pace of learning from different websites.
- Preparing teaching plan (at least five) using constructive approach and including at least three of the following activities- Pair work, group work, story telling, role play, drama, songs/rhymes, questioning to promote thinking
- Peer analysis of the lesson plans
- Searching and downloading lesson plans based on constructivist approach.
- Edit, moderate and contextualize at least one lesson plan.
- Present lesson plan digitally (on LCD projection or on Smartphone)

- prepare a unit plan and present it in a peer group.
- Organize a reflection session after a teaching session in the DIET/ College/ Institute
- Prepare a test for any class- the text should include a mix of objective type, short answer type and long answer type questions.
- on your mobile phone, prepare short video clips of 3 to 7 minutes duration, capturing different stages of administration of test.

The internal assessment will be done on the following two subsections-

A. Suggested activities for active learning

- Analyze (in pairs) at least one of the textual open educational resources (OER's) and present the analysis in a seminar mode.
- Read and summarize any one of the following documents-NCF (2005), (any one portion paper)

B. Suggested ICT activities

- Download at least one educational video, prepare three to five questions (viewing tasks) to be posted to viewers (like," What does the teacher do to assess learning?")
- Show the videos (on Smartphone/ LCD projector/Monitor) to peers along with viewing tasks discuss among them the tasks and give your feedback

Referances

Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.

Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)

Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.

NCERT (2005). National Curriculum Framework, 2005. New Delhi: NCERT

NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi.

Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatternly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.

(http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

प्रथम वर्ष – गणित शिक्षण

(पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक के लिए)

Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)

(प्रश्न पत्र –10)

पूर्णांक –100

बाह्य अंक – 70

आन्तरिक अंक – 30

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim) :–

एक शिक्षार्थी गणित भाषा, संकेतों का इस्तेमाल उस समय शुरु करता है जब वह व्यवस्थित रूप में गणित का अध्ययन शुरु करता है। इसके अलावा जब उन्हें कक्षा में गणितीय अवधारणाएं सिखाई जाती है तो उनमें अमूर्त चिंतन, सामान्यीकरण, अनुमान लगाना, मात्रा निर्धारण, तर्क के गणितीय तरीकों की समझ विकसित होना चाहिए। एक शिक्षक को अवधारणात्मक ज्ञान के साथ इन प्रक्रियाओं, पढ़ाने के तरीकों और गणित सीखने के अन्य आयामों की जानकारी होनी चाहिए। यह कोर्स गणित के मूलभूत कार्यक्षेत्रों पर एक गहरी दृष्टि डालता है जो बीजगणितीय चिंतन, स्थान की समझ (Visualization of Space) संख्या बोध और आँकड़ों का प्रबंधन (Data Handling) आदि के विकास के लिए आवश्यक है।

दशकों से गणित प्राथमिक स्कूलों में अनिवार्य विषय रहा है। लेकिन अभी तक बच्चों के जीवन में यह कोई उल्लेखनीय स्थान नहीं बना पाया है। बच्चों को स्कूल के पहले के अपने गणित के ज्ञान को कक्षा में पढ़ाये जाने वाले व्यवस्थित गणित से जोड़ने में दिक्कत होती है और अन्त में एक विरोधाभास पैदा हो जाता है। इसे रोकने के लिए शिक्षकों को ना सिर्फ गणित की समझ होनी चाहिए बल्कि बच्चों द्वारा गणित सीखने की प्रक्रिया की भी जानकारी होनी चाहिए। इस कोर्स से जुड़ने से ऐसे भावी शिक्षकों का निर्माण होगा जो ऐसी वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों से अवगत होंगे, जो विषय के प्रकृति और बच्चों की सीखने की प्रक्रिया के अनुरूप हों। यह पेपर उन्हें इस बात के लिए तैयार करेगा कि वे पढ़ाने के दौरान बच्चों के पूर्व गणितीय ज्ञान का इस्तेमाल करते हुए व उनकी गलतियों को समझते हुए कार्य कर सकें और इस तरह बच्चों के दिमाग में उस अन्तर को भरने में सहायता कर उन्हें स्वतंत्र चिन्तन के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

स्कूल आने से पहले ही बच्चे गणित से परिचित हो चुके होते हैं और अपनी तरह से उसका प्रयोग भी कर रहे होते हैं। स्कूल में उनका सामना गणित के व्यवस्थित रूप से होता है जो प्रायः गणित के ज्ञान की

उनकी अपनी आन्तरिक प्रक्रिया के विरोध में खड़ा हो जाता है। प्रभावी शिक्षण के लिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को इस विरोधाभास और अन्तर की समझ होनी चाहिए।

राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र गणित शिक्षण (एनसीईआरटी, 2006) के अनुसार "गणित शिक्षा, शिक्षक की अपनी तैयारी, उसकी अपनी गणित की समझ, गणित के शिक्षा शास्त्रीय स्वभाव की समझ तथा उसकी अपनी अध्यापन–विधा की तकनीकों पर बहुत हद तक निर्भर करता है।" प्रत्येक शिक्षक को गणित की अपनी समझ को नये तरीके से विकसित करने की जरूरत होती है जो बच्चों के दिमाग में चल रही सीखने की प्रक्रिया को समझ सके और उसे अपना प्रस्थान बिन्दु बना सके। शिक्षकों को उन तरीकों के बारे में पता होना चाहिए जिन तरीकों से बच्चे सोचते हैं, जिससे वे अपनी शिक्षण विधि को इस तरह मोड़ सकें कि वह बच्चे के गणितीय ज्ञान की वैकल्पिक अवधारणाओं से अपना सामंजस्य बिठा सकें।

इस कोर्स का उद्देश्य भावी शिक्षकों को इस तरह संवेदनशील बनाना है कि वे न सिर्फ प्राथमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले गणित के विषय के अपने ज्ञान का चिंतन कर सकें, बल्कि बच्चों और उनके अनुभवों से अपने आप को जोड़ सकें। इस कोर्स से जुड़ने से भावी शिक्षक इस योग्य हो सकेंगे कि वे बच्चों और उनकी गणित शिक्षा के बारे में शोध में कही गई चीजों से सीख सकें और उस पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकें तथा सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकें।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

छात्राध्यापकों को

- प्राथमिक स्तर के गणित के विषय क्षेत्र पर अपनी गहरी समझ विकसित करने योग्य बनाना।
- उन घटकों के प्रति जागरूक करना जो गणित सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं।
- उन तरीकों के बारे में संवेदनशील बनाना जिन तरीकों से छात्र गणितीय ज्ञान के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।
- कौशल विकास, गहरी अन्तर्दृष्टि पैदा करने, उपयुक्त सोच हासिल करने एवं बच्चों के प्रभावी तरीके से सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए कारगर रणनीतियों की समझ विकसित करने में मदद करना।
- अर्थपूर्ण तरीके से गणित सीखने और पढ़ाने के लिए आत्मविश्वास का निर्माण करना।
- मुख्यतः संख्या और स्थान (space) से सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं और पढ़ाने के दौरान बच्चों के साथ इसका प्रयोग करने के कौशल और समझ को विकसित करना।
- गणितीय तरीके से सोचने और तर्क कर सकने के योग्य बनाना।
- अवधारणाओं को उसकी तार्किक परिणति तक ले जा पाये और कक्षा में छात्रों के साथ इसका प्रयोग कर पाने योग्य बनाना।
- बच्चों के लिए उचित गतिविधियों को डिज़ाइन कर सकने के ज्ञान एवं कौशल में समर्थ बनाना।

ये इकाइयाँ इस तरह बनाई गई हैं कि भावी शिक्षकों को यह समझने में मदद मिले कि छात्रों का सीखना इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षक ने विषयवस्तु को कैसे सीखा है और बच्चे किस तरह गणितीय ज्ञान को ग्रहण करते व प्रतिक्रिया देते हैं।

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	गणित से परिचय (Introduction to Mathematics)	10
2	2	गणित शिक्षण सिद्धांत और शिक्षण विधियां (Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)	15
3	3	गणना, संस्थाएं एवं उनकी संक्रियाएं (Counting, Numbers and its Operations)	10
4	4	ज्यामितिय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)	10
5	5	पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)	15
6	6	कक्षा योजना एवं आकलन (Classroom Planning and assisment)	10
		आंतरिक अंक –	30
		कुल अंक –	100

इकाई 1 : गणित से परिचय (Introduction to Mathematics)

- गणित क्या है और जीवन में यह कहाँ–कहाँ है?
- हम गणित क्यों पढ़ाते हैं?
- दैनिक जीवन में गणित की क्या आवश्यकता व महत्व है?
- गणित के आयाम : अवधारणा, प्रक्रिया, प्रतीक व भाषा।
- गणितीकरण।

इकाई 2 : गणित– शिक्षण सिद्धान्त और शिक्षण विधियाँ (Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)

- सीखने वाले को समझना
- सीखने की प्रक्रिया को समझना
- सीखने एवं शिक्षण की त्रुटियाँ

- गणित सीखने एवं सिखाने की विधियाँ– आगमनात्मक और निगमनात्मक (Induction and Deduction), विशिष्टीकरण एवं सामान्यीकरण, गणित के सिद्धान्त

इकाई 3 : गणना, संख्याएँ एवं उनकी संक्रियाएँ (Counting, Numbers and its Operations)

- संख्या–पूर्व अवधारणाएँ।
- संख्या की समझ एवं प्रस्तुति।
- अंक और संख्या।
- गणना और स्थानीयमान।
- भिन्न की अवधारणा और उसकी प्रस्तुति।
- संख्याओं और गणितीय संक्रियाएँ।

इकाई 4 : ज्यामितीय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)

आकृतियों के प्रकार– द्विविमीय एवं त्रिविमीय (2 डी और 3 डी)।

- आकृतियों की समझ– परिभाषा, आवश्यकता और अन्तर।
- गणित में विभिन्न आकारों की समझ।
- पैटर्न– परिभाषा, आवश्यकता और प्रकार।
- संख्याओं और आकृतियों में पैटर्न की समझ।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)

गणित की पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए दार्शनिक और मार्गदर्शी सिद्धान्त।

- गणित शिक्षण के लिए विषयवस्तु, दृष्टिकोण तथा विधि– संवादमूलक और सहभागी तरीका, एक सुविधादाता के रूप में शिक्षक।
- विषय (Theme), इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और उसके प्रभाव।
- अकादमिक मानक और सीखने के संकेतक।
- गणितीय पाठ्यचर्या के प्रभावी अंतरण (transaction) के लिए अधिगम स्त्रोत (Learning Resources)।

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं आकलन (मूल्यांकन) (Classroom Planning and assisment)

- शिक्षण तैयारी : गणित शिक्षण के लिए योजना, वार्षिक योजना, इकाई योजना और कालखंड योजना।
- योजना का आकलन (मूल्यांकन)।
- आकलन व मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आकलन (CCE)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उपकरण, योगात्मक आकलन, भारिता टेबल (वेटेज टेबल), पृष्ठपोषण एवं रिपोर्टिंग, रिकार्ड एवं रजिस्टर।

सत्रगत कार्य (Assignments)

सत्रगत कार्य अंतर्गत छात्राध्यापक पूरी प्रक्रिया का अभिलेखीकरण कर सामग्री सहित प्रस्तुत करेंगे। (कोई दो)

1. एबाकस का निर्माण तथा इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
2. ज्यो (GEO) बोर्ड का निर्माण एवं कक्षा–शिक्षण में इसका उपयोग करना।
3. संख्या रेखा के मॉडल का निर्माण व इसके द्वारा शिक्षण ।
4. कागज को मोड़कर गतिविधियों से गणित शिक्षण करना।
5. भिन्न डिस्क का निर्माण एवं दशमलव की समझ हेतु कक्षा शिक्षण में उपयोग करना।
6. पथ के क्षेत्रफल हेतु मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
7. पाइथागोरस प्रमेय का मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना।
8. गणित की किसी एक अवधारणा के मूल्यांकन हेतु उपकरण का निर्माण कक्षा में उपयोग करना।
9. बच्चों को आने वाली कठिनाई की पहचान कर कारणों का विश्लेषण व निराकरण करना।
10. इंटर्नशिप की शाला मे गणितीय कोने (Maths Corner) की स्थापना करना।
11. अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ/खेल का संग्रह करना एवं स्वयं पहेलियाँ/खेल बनाना।
12. अपने साथी छात्राध्यापक के गणित कक्षा शिक्षण (कम से कम 5) का विशेलषणात्मक अवलोकन करना।
13. विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के पाठ –योजना तैयार करना।
14. दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाईयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

- गणितीय ज्ञान के प्रति बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसकी समझ हासिल करने के लिए भावी शिक्षकों को बच्चों द्वारा किए गए काम के अवलोकन पर आधारित चर्चा में बच्चों को शामिल करना चाहिए।

- गणित की विभिन्न अवधारणाओं के बीच जुड़ाव और सम्बन्धों को समझने के लिए भावी शिक्षकों को समूह में अवधारणात्मक ख़ाका (concept maps) बनाना । जिससे समूह कार्य के महत्व को आत्मसात किया जा सके।
- उठाए गए मुद्दों के नज़रिये से सिद्धान्त को समझने के लिए पाठ्य वस्तु (जैसा कि चर्चा के रूप में सुझाव दिया गया है) को संवाद के साथ पढ़ना चाहिए।
- गणित के ज्ञान के ऐतिहासिक उदाहरणों को विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से एकत्र करना और उस पर अपनी राय व्यक्त करना।
- गणितीय मॉडल (विशेषकर ज्यामिति से संबंधित) बनाना।
- प्रस्तुति के माध्यम से शिक्षण–अधिगम की सामग्रियों को आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

1. म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें।
2. गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी.लाल
3. गणित अध्ययन सत्संगी एवं दयाल
4. NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित
5. Position Paper National Focus Group on Teaching of Mathematics
6. NCERT द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर
7. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
8. वैदिक गणित स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ
9. वैदिक गणित भाग 1,2,3, – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा
10. मापन एवं मूल्यांकन –आर.ए. शर्मा
11. राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका
12. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)